द्वितीय संस्करण

प्रेरणा

नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

अक्टूबर - दिसम्बर 2022

नौएडा दादरी रोड, फेस-II, नौएडा,
जिला-गौतमबुद्धनगर - 201305

संदेश

यह वास्तव में खुशी की बात है कि जब हम आजादी का अमृत महोत्सव (अमृत कल) मना रहे हैं, नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र की पत्रिका 'प्रेरणा' का दूसरा संस्करण निकाला जा रहा है। हम इस पत्रिका को निकालने की दिशा में काम करने के लिए नोएडा एसईजेड के सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहते हैं। हमें विश्वास है कि नोएडा एसईजेड के सभी कर्मचारी और इकाइयां विविध विषयों पर योगदान देंगे ताकि हम इस पत्रिका के भविष्य के संस्करण निकाल सकें। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य नोएडा एसईजेड में महत्वपूर्ण गतिविधियों को उजागर करना है। यह भी खुशी की बात है कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए हमें उत्तरी क्षेत्र में वर्ष 2020 प्रथम पुरस्कार मिला है। हम अपने आधिकारिक संचार और टिप्पणियों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। हम अपने नोटिस बोर्ड में हर रोज एक नया हिंदी शब्द लिखते हैं ताकि लोगों को अपनी शब्दावली में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। हमारे अधिकारियों ने भी उपलब्ध डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके हिंदी में अपनी टिप्पणी बढ़ा दी है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन से हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान मिलेगा।

ए. बिपिन मेनन

अ. बिपिन मेनन

विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
संदेश	01
इतिहास	04–06
नौएडा एसईजैड और गैबॉन एसईजैड के बीच आपसी सहयोग	07–08
विजेताओं के नाम	09–11
कार्यालय द्वारा आयोजित कुछ महत्वपूर्ण बैठकें एवं महत्वपूर्ण चलचित्र	12–21
चमत्कार को नमस्कार	22–24
जीवन एक प्रश्न	25–28
योग एक अनुभव	29–30
मैं एक देश हूँ	31
साहब का साईरन	32
तीन पहर	33–34
काश मेरी तकदीर	35
व्यापारिक स्वतंत्रता एक विश्लेषण	36–37
राह पकड तू एक ऐसी	38
मदद	39
तिरंगा	40
आज़ादी	41
जीवन के सार	42
एक सवाल	43
पल पल की कीमत	44
एक खोज	45
छात्र/व्यक्ति के जीवन में सफलता की ओर जाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	46
माँ–बाप को भूलना नही	47
आवाज	48
माँ	49
गजल	50
प्यारी भारत माता	51
लम्हें	52
हकीकत	53
प्रेरक लघु कहानियाँ	54–55
लोकतंत्र का उत्सव	56

प्रिय मित्र 57
कुदरत 58–59
वतन की खातिर 60
माँ 61
रिश्तों का प्यार 62
पिता 63–64
मंगलसूत्र 65
बेटियाँ 66–67
आधुनिक जीवन शैली में योग का महत्व 68–69
दृष्टिकोण 70–71
सावन जा रहा है 72
स्वच्छ मेरा गाँव 73
छोटे बच्चे की इच्छा 64
बेटियाँ 75
इतिहास 76–77
माँ जैसा कोई नही 78
घर का बडा बेटा 79
जश्न–ए–आजादी.. 80
साधु संत 81
शुक्रिया 82
तू कुछ करने की जिद कर 83
हर पल जियो 84
तुझ में नजर आऊँगी 85
परदेश की दौड़ 86
शायरी 87
विदेश–व्यापार नीति स्वच्छता काम की नैतिकता के विषय पर टिप्पणी 88–89
प्यारी माँ 90
तेरी जयकार 91
फूल 92
मेरा गांव 93
संपादकीय समिति द्वारा अपील.. 94
अधिकारियों की सूची 95
सम्मान पत्र 96

इतिहास

नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र उत्तर भारत में वाणिज्य विभाग एवं उद्योग मंत्रालय का एक अधीनस्थ कार्यालय है। इसकी स्थापना वर्ष 1985 में लगभग 310 एकड भ–भाग मे की गई है।

भारत की राजधानी नई दिल्ली से 24 किमी की दूरी पर है।

यह केंद्र सरकार द्वारा स्थापित एकमात्र विशेष आर्थिक क्षेत्र है जो उत्तर भारत में स्थित है। यहाँ भारत सरकार ने इसके विकास हेतु रू 1105.08 करोड विनिवेश किया है। यह उद्यमियों को पूर्ण विकसित बुनियादी सुविधा जैसे कि निर्वाध विद्युत आपूर्ति, कुशल संचार सुविधा, विश्वासनीय परिवहन सेवा, मेट्रो स्टेशन, नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र जो कि कार्यालय परिसर मे ही है। नौएडा अंतर्राष्ट्रीय बस अड्डा जिसकी दूरी विकास आयुक्त कार्यालय से मात्र 500–600 मीटर है। सीमाशुल्क निकासी व भंडारण सुविधा, बैंकिंग सुविधा, स्वर्ण व आभूषण एकक के लिए पृथक परिसर व सहायक सेवा, सॉफ्टवेयर निर्यातकों के लिए उपग्रह डाटा लिंक संचार सुविधा आदि मुहैया करा रहा है। वर्ष 2021 –22 में रू० 8408.71 करोड का निर्यात हुआ है। रोजगार सृजन 31 मार्च 2022 में 40150 हो गया है। इसके अंतर्गत राज्य / प्राइवेट विशेष आर्थिक क्षेत्र और निर्यात उन्मुक्त ईकाई (ई० ओ० यू०) जो मुख्यतः नौ राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में हैं जिनके नाम हैः– जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़।

यह कार्यालय भारत सरकार के दो मुख्य योजनाओं–विशेष आर्थिक क्षेत्र योजना और शत–प्रतिशत निर्यातोन्मुख ईकाई योजना का कार्यन्वयन और देख–रेख कर भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने, रोजगार के सृजन और निवेश के बढ़ावा देने में सक्रिय है।

सभी क्षेत्रों का कुल निर्यात जो नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत आते है। रु. 79220.19 करोड विनिवेश रु. 50002.54 करोड तथा कुल रोजगार 394133 है।

विकसित प्लॉट का आंवटन रू 176 प्रतिवर्ष की दर से 15 वर्ष की अवधि के लिए पट्टा किराया पर दिया जाता है। 15 वर्ष से पूर्व यदि अनुमोदन पत्र (LOA) वैध नही रहता है तो नियम

2006 के नियम पी 1 (5) के तहत लीज भी वैध नही रह जाती है। मानकीकृत कारखाने परिसर में निर्मित भाग को 5 वर्ष के लिए 2125/– प्रति वर्ग मीटर प्रतिवर्ष की दर से आंवटित किया जाता है। इनके किराये प्रत्येक वर्ष या समय–समय पर इसे बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के संशोधित किया जा सकता है। करार की समाप्ति पर नवीनीकृत किया जा सकता है।

भाषाई आधार पर यह कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित है। हमारा कार्यालय राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के तहत 11 जनवरी 1988 से अधिसूचित है।

विशेष आर्थिक क्षेत्र के स्थापना का उद्देश्य :

- घरेलू और विदेशी स्त्रोतों से निवेश का संवर्धन
- निर्यात के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी सुविधाओं का विकास
- वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात संवर्धन
- प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण
- आर्थिक कार्यकलापों का सकल
- विकास रोजगार सृजन
- एक ही छत के नीचे सारी सुविधाएँ प्रदान करना ।

नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र के क्षेत्र में इकाई स्थापित करने के लिए अतिरिक्त आकर्षण :

नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र के परिसर मे विभिन्न सरकारी बैंक, डाकघर व बीमा के कार्यालय है। इससे यहा के अधिकारी/कर्मचारी लाभान्वित होते है। इसके अलावा आगन्तुकों के लिए पार्किंग में जनसुविधाओं की भी व्यवस्था है और जलपान हेतु भोजनालय की भी व्यवस्था परिसर में उपलब्ध है। अभी हाल ही में नौएडा, ग्रेटर – नौएडा मैट्रो का एक द्वार कार्यालय के परिसर मे भी बनाया गया हैं व मैट्रो स्टेशन का नाम एन. एस. ई. जैड रखा गया है।

कार्यालय के कर्मचारी में राजभाषा के प्रति जागरूकता लाने के प्रयोजन से 14–30

सितम्बर, 2022 के बीच हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए हिन्दी टंकण प्रतियोगिता हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता, मूल हिन्दी लेखन प्रतियोगिता, आशुलिपी लेखन प्रतियोगिता और अधिकारियों के लिए हिन्दी डिक्टेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्टॉफ के बच्चों को 10वीं / 12वीं में वर्ष 2022 में हिन्दी विषय में अच्छे अंक के आधार पर भी एक प्रोत्साहन पुरस्कार रखा गया था। सभी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार राशि विकास आयुक्त महोदय द्वारा प्रदान किया गया।

सशस्त्र सेना झंडा दिवस 7 दिसम्बर को प्रतिवर्ष की भांति शहीद सैनिको की याद में दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजली दिया गया। जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

नोएडा एसईजेड और गैबॉन एसईजेड के बीच आपसी सहयोग

गैबॉन पश्चिमी अफ्रीका का एक देश है जहाँ फ्रेंच मुख्य भाषा है। इसकी राजधानी लिब्रेविल है, जिसका फ्रेंच से अनुवाद करने पर "मुक्त शहर" का अर्थ है। देश मैंगनीज और पेट्रोलियम तेल जैसे खनिज संसाधनों में समृद्ध है जबकि लकड़ी भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

विकास आयुक्त नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र ने 19.07.2022 को नई दिल्ली में गैबॉन के माननीय उद्योग और व्यवसाय विकास मंत्रियों के साथ मुलाकात की। बैठक में भारत में एसईजेड के समग्र ढांचे और गैबॉन एसईजेड और एनएसईजेड के बीच संभावित सहयोग पर चर्चा हुई।

इसके बाद, गैबॉन विशेष आर्थिक क्षेत्र के प्रशासक, ऐनी नेकेन बायो'ओ ने 22 जुलाई, 2022 को नोएडा एसईजेड का दौरा किया। विकास आयुक्त, नोएडा एसईजेड ने एसईजेड योजना की मुख्य विशेषताओं पर एक प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति में इकाइयों और डेवलपर्स के लिए वित्तीय लाभ और बचत के बारे में बताया गया। व्यापार को सुविधाजनक बनाने के उपायों में एकल खिड़की की अवधारणा पर चर्चा की गई। प्रस्तुति में निर्यात, निवेश और रोजगार सृजन में वृद्धि पर भी प्रकाश डाला गया।

सुश्री ऐनी नेकेन बायो'ओ ने नोएडा एसईजेड की कुछ इकाइयों जैसे कि निटप्रो का भी दौरा किया। यह इकाई जो हॉबी सेगमेंट के तहत सुई और अन्य हस्तशिल्प उत्पादों का निर्माण करती है। वे अपने अंतिम उत्पाद के लिए बहुत सारी लकड़ी का स्रोत भी करते हैं जिसे बाद में अमेरिका और यूरोप जैसे विकसित देशों में निर्यात किया जाता है।

दोनों विशेष आर्थिक क्षेत्रों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच बैठक बहुत उपयोगी रही। योजनाओं के विवरण और सिंगल विंडो कॉन्सेप्ट को कैसे लागू किया जा रहा है, इसे समझना महत्वपूर्ण था। विपणन और निर्यात संवर्धन पर विचारों का आदान–प्रदान भी उपयोगी था। दोनों पक्षों ने आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने की दृष्टि से अपने पारस्परिक सहयोग को मजबूत करने का निर्णय लिया।

हिंदी पखवाड़ा 14-30 सितम्बर, 2022

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा 14–30 सितम्बर, 2022 के बीच मनाया गया। पखवाड़ा दौरान आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं का विवरण निम्ननुसार है ।

हिंदी मे राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री जाविर अली, आशुलिपिक–II	प्रथम	4,000/-
2	श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक–II	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री मोनिष, अ.श्रे. लि.	तृतीय	2,000/-
4.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-
5.	श्री भारत भूषण, सहायक	सांत्वना	1,000/-

हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	प्रथम	4,000/-
2.	श्री अरुण सिंह परिहार, आशुलिपिक–II	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक –II	तृतीय	2,000/-
4.	श्री रमेश कुमार, सहायक	सांत्वना	1,000/-
5.	श्रीमति सोनिका, अ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-

हिंदी में टाइपिंग प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री जाविर अली, आशुलिपिक–II	प्रथम	4,000/-
2.	श्री मुन्त्याज, सहायक	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक –II	तृतीय	2,000/-
4.	श्रीमति सोनिका, अ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-
5.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-

हिंदी में आशुलिपिक लेखन प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री जाविर अली, आशुलिपिक–II	प्रथम	4,000/-
2.	श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक –II	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री अरुण कुमार अग्रवाल, सहायक	तृतीय	2,000/-
4.	श्री मुन्त्याज, सहायक	सांत्वना	1,000/-

हिंदी में नोटिंग प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री मुन्त्याज, सहायक	प्रथम	4,000/-
2.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री जाविर अली, आशुलिपिक–II	तृतीय	2,000/-
4.	श्री रमेश कुमार, सहायक	सांत्वना	1,000/-
5.	श्री सूरज भान, उ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-

हिंदी में भाषण प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री अरुण सिंह परिहार, आशुलिपिक–II	प्रथम	4,000/-
2.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक –II	तृतीय	2,000/-
4.	श्री मोनिष, अ.श्रे. लि.	सांत्वना	1,000/-
5.	श्रीमति संतोष कुमारी, सहायक	सांत्वना	1,000/-

हिंदी में वाद–विवाद प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्रीमति करुणा गाबा, डाटा एंट्री आप्रेटर	प्रथम	4,000/-
2.	श्री रितेश रंजन, डाटा एंट्री आप्रेटर	द्वितीय	3,000/-
3.	श्री भारत भूषण, सहायक	तृतीय	2,000/-
4.	श्री मोहित चौधरी, डाटा एंट्री आप्रेटर	सांत्वना	1,000/-
5.	श्री दीपक सेंगर, प्रोग्रामर	सांत्वना	1,000/-

हिंदी मे वाद–विवाद प्रतियोगिता मे दो टीम बनाई गयी थी। इस प्रतियोगिता मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना के अतिरिक्त भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कार दिया गया। जिसमे पहली विजेता टीम के प्रत्येक प्रतिभागी को रु० 500/- एवं दूसरी टीम के प्रत्येक प्रतिभागी को रु० 450/- दिए गये। प्रतिभागियों का ब्यौरा निम्न प्रकार है :–

हिंदी में वाद–विवाद प्रतियोगिता :–

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्रीमति अरुण कुमार अग्रवाल, सहायक	–	500/-
2.	श्री सुनील कुमार गुल्यानी, आशुलिपिक–II	–	500/-
3.	श्री जितेन्द्र कुमार, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	500/-
4.	श्री आकाश शर्मा, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	500/-
5.	श्री मोनिष, अ.श्रे. लि.	–	500/-
6.	श्री प्रमोद कुमार, उ.श्रे. लि.	–	500/-
7.	श्रीमती सोनिया, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	500/-
8.	श्री ललित कुमार, MTS	–	500/-
9.	श्री सचिन परिहार,डाटा एंट्री आप्रेटर	–	500/-
10.	प्रिय शर्मा, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	500/-

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	दूसरी टीम	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री अरुण सिंह परिहार, आशुलिपिक–II	–	450/-
2.	श्री जाविर अली, आशुलिपिक–II	–	450/-
3.	श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे. लि.	–	450/-
4.	श्री रमेश कुमार, सहायक	–	450/-
5.	श्रीमति संतोष कुमारी, सहायक	–	450/-
6.	श्री कृष्ण कुमार, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	450/-
7.	श्रीमति सोनिका, अ.श्रे. लि.	–	450/-
8.	श्री मुनत्याज, सहायक	–	450/-
9.	श्री अशोक कुमार, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	450/-
10.	श्री रवि कुमार, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	450/-
11.	श्री कमल अहमद, डाटा एंट्री आप्रेटर	–	450/-

पखवाड़ा के दौरान हिंदी में डिक्टेशन प्रतियोगिता (अधिकारी वर्ग) :–

क्र.सं.	अधिकारी का नाम	पुरस्कार राशि (रु. में)
1.	श्री प्रमोद कुमार, सहायक विकास आयक्त	4,000/-
2.	श्री हरि किशन मीना, सहायक विकास आयक्त	4,000/-
3.	श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप, सहायक विकास आयक्त	4,000/-

स्टाफ के आश्रितों के लिए 10वी व् 12वी में हिंदी विषय में प्राप्तांक पर प्रोत्साहन पुरस्कार

1.	श्री सिद्धार्थ, पुत्र भारत भूषण, सहायक	4,000/-

विकास आयुक्त की अध्यक्षता में नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र, नौएडा के राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 29.12.2020 को आयोजित की गई। अध्यक्ष महोदय ने अन्य बातों के साथ समिति को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में आयोजित की गई निरीक्षण बैठक दिनांक 27.11.2020 की कार्रवाई से अवगत कराया। अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों को राजभाषा वार्षिक लक्ष्य 2020–21 का अनुपालन सुनिश्चित करने का आदेश दिया ।

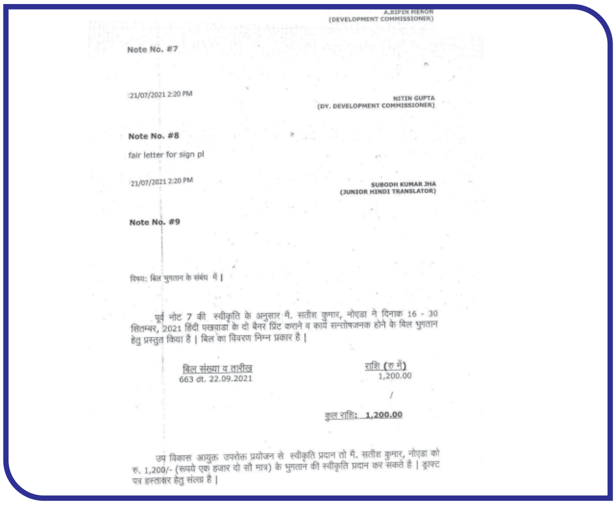

A.BIPIN MENON
(DEVELOPMENT COMMISSIONER)

Note No. #7

21/07/2021 2:20 PM

NITIN GUPTA
(DY. DEVELOPMENT COMMISSIONER)

Note No. #8

fair letter for sign pl

21/07/2021 2:20 PM

SUBODH KUMAR JHA
(JUNIOR HINDI TRANSLATOR)

Note No. #9

विषयः बिल भुगतान के संबंध में |

पूर्व नोट 7 की स्वीकृति के अनुसार मै. सतीश कुमार, नोएडा ने दिनाक 16 - 30 सितम्बर, 2021 हिंदी पखवाडा के दो बैनर प्रिंट कराने व कार्य सन्तोषजनक होने के बिल भुगतान हेतु प्रस्तुत किया है | बिल का विवरण निम्न प्रकार है |

बिल संख्या व तारीख	राशि (रु में)
663 dt. 22.09.2021	1,200.00

कुल राशि: 1,200.00

उप विकास आयुक्त उपरोक्त प्रयोजन से स्वीकृति प्रदान तो मै. सतीश कुमार, नोएडा को रु. 1,200/- (रुपये एक हजार दो सौ मात्र) के भुगतान की स्वीकृति प्रदान कर सकते है | ड्राफ्ट पत्र हस्ताक्षर हेतु संलग्न है |

ई–ऑफिस को स्वतंत्र कार्यों को एक साथ लाने के लिए डिजाइन किया गया है, यह सिस्टम पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाता है, डेटा की सुरक्षा और अखंडता सुनिश्चित करता है और साथ ही कर्मचारियों के समय और ऊर्जा की बचत करता है। नौएडा सेज को अभिमान है कि हम ने ई–ऑफिस को 20/07/2021 से ही अपना लिया है और लगभग शतप्रतिशत काम अब ई ऑफिस के जरिये हो रहा है।

माननीय श्री पीयूष गोयल वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 20.09.2021 वाणिज्य सप्ताह का राष्ट्रीय शुभारंभ किया गया साथ ही उत्तर प्रदेश के लिए निर्यात विवरणिका जारी की गई।

माननीय श्री पीयूष गोयल द्वारा अपने मुख्य भाषण में जिन प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया,वे निम्नलिखित थे:

- उत्तर प्रदेश ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सहित काफी प्रगति की है।
- प्राथमिक ध्यान किसानों और एमएसएमई पर रहा है।
- सामाजिक अवसंरचना विकास एक प्राथमिकता रही है।
- आत्मानिर्भर भारत के आधार पर आर्थिक विकास।
- वाणिज्य सप्ताह एक कार्रवाई का आवाहन है।
- 24 घंटे हेल्पलाइन की स्थापना।

अपने संबोधन में विकास आयुक्त महोदय नौएडा एसईजेड ने कहा कि नोएडा एसईजेड के लिए वाणिज्य सप्ताह के राष्ट्रीय शुभारंभ की मेजबानी करना एक सम्मान की बात है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि वाणिज्य सप्ताह माननीय प्रधान मंत्री द्वारा निर्धारित लक्ष्य के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगा और माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के स्पष्ट दृष्टिकोण के तहत एसईजेड के लिए परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने की आशा व्यक्त की।

"आजादी का अमृत महोत्सव"–जैसे पूरा देश भारतीय स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है, नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र ने भी 23.09.2021 को क्षेत्र के अंदर और नजदीकी सरकारी स्कूलों में वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। जिसके बाद निजी एसईजेड से जैसे कि अर्शिया एफटीडब्ल्यूजेड, एएसएफ, अर्था, डीएलएफ, एचसीएल, सन फार्मा, आईटीपीजी और महिंद्रा वर्ल्ड सिटी एसईजेड से सकारात्मक और प्रेरणादायक प्रतिक्रिया मिली।

नोएडा एसईजेड में दिनांक 02.10.2021 फिट इंडिया अभियान के हिस्से के रूप में वॉकथॉन और स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया जो फिट इंडिया के नारे के अनुरूप "फिटनेस की डोज़ आधा घंटा रोज" है। इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए माननीय सांसद डॉ महेश शर्मा और सबा करीम को धन्यवाद।

"आजादी की दौड़" दिनांक 02.10.2021 को जोन के भीतर 5.25 किलोमीटर की दूरी की "आजादी की दौड़" का आयोजन किया गया। श्री मदन लाल, भारतीय क्रिकेटर और विश्व कप क्रिकेट–1983 की विजेता भारतीय टीम के सदस्य ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। विकास आयुक्त महोदय ने जीवन में स्वास्थ्य और खेल के महत्व पर सभा को संबोधित किया। आजादी की दौड़ मुरादाबाद एवं जयपुर एसईजेड में भी आयोजित की गई।

वाणिज्य सचिव द्वारा 07.10.2021 को नोएडा एसईजेड को स्वच्छता पुरस्कार प्रदान किया गया। विकास आयुक्त महोदय श्री बिपिन मेनन ने श्री ललित बिहारी सिंघल,विकास आयुक्त और उनकी टीम जिनके प्रयासों की वजह से ये पुरस्कार मिला उनका आभार प्रकट किया।

राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर को भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के रूप में मनाया जाता है, जिन्होंने कई रियासतों को भारत संघ में शामिल होने के लिए राजी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ– मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूं कि मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूंगा और अपने देशवासियों के बीच यह संदेश फैलाने का भी भरसक प्रयत्न करूंगा। मैं यह शपथ अपने देश की एकता की भावना से ले रहा हूं जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता एवं कार्यों द्वारा संभव बनाया जा सका। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प करता/करती हूँ।

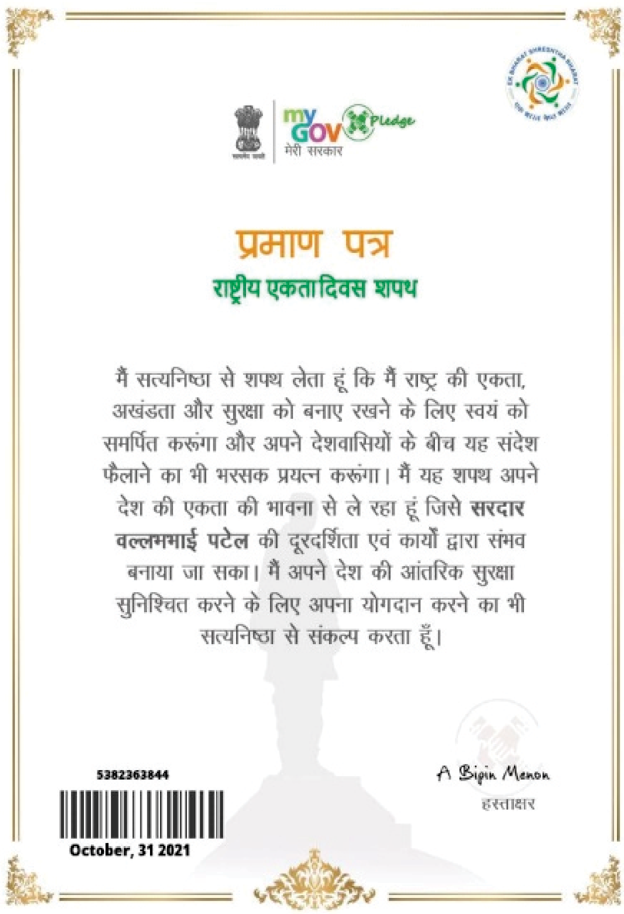

आरओडीटीईपी समिति ने दिनांक 15.12. 2021 को नोएडा एसईजेड का दौरा किया जहां अध्यक्ष और सदस्यों ने व्यापार प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की। एसईजेड इकाइयों और ईओयू को रोडटेप से बाहर रखा गया था। समिति ने बातचीत के माध्यम से डेटा एकत्र करने और उस कर, शुल्क को समझने की कोशिश की जो निर्यात मूल्य का हिस्सा बन जाता है। समिति ने इसके लिए विभिन्न एसईजेड इकाइयों और ईओयू का दौरा भी किया।

26 जनवरी, 2022 कार्यालय मे बड़ी धूम धाम से मनाया गया इस समारोह मे विकास आयुक्त महोदय ने कार्यालय परिसर मे ध्वजारोहण किया एवं समारोह मे उपस्थित सभी अधिकारियों / कर्मचारियों के द्वारा राष्ट्रगान भी गाया गया।

विकास आयुक्त महोदय श्री ए. बिपिन मेनन, दिनांक 21.02.2022 राजभाषा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (शील्ड) प्राप्त करते हुए ।

श्री नितिन गुप्ता, उप विकास आयुक्त, दिनांक 21.02.2022 राजभाषा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (प्रशस्ती पत्र) प्राप्त करते हुए ।

विकास आयुक्त कार्यालय, नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र मे दिनांक 21.06.2022 को योग दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर योगदान दिया ।

माननीय प्रधान मंत्री महोदय द्वारा दिनांक 23.06.2022 को वाणिज्य भवन का उद्घाटन किया गया।

दिनांक 31.08.2022 को विकास आयुक्त कार्यालय नोएडा एसईजेड कनाडा और यूके के साथ प्रस्तावित एफटीए पर उच्च स्तरीय परामर्श से जुड़कर बहुत खुशी हुई ।

कार्यालय मे ईओयू योजना के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए, इसकी मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालने के लिए और इसे और बेहतर बनाने के लिए सुझाव जानने हेतु ईओयू योजना पर एक आउटरीच दिनांक 10.08.2022 आयोजित की गई। जिसमे 120 से ज्यादा व्यापार प्रतिनिधिओ ने भाग लिया और अपने सुझाव दिए, जो डी जी एफ टी और वाणिज्य मंत्रालय को भेजे गए।

विकास आयुक्त कार्यालय एनएसईजेड में 10 अगस्त 2022 को हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता मे कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

विकास आयुक्त कार्यालय एनएसईजेड में 15 अगस्त 2022 को हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता मे विजेता टीम 'सीमा शुल्क अनुभाग' को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

15 अगस्त, 2022 कार्यालय मे बड़ी धूम धाम से मनाया गया इस समारोह मे विकास आयुक्त महोदय ने कार्यालय परिसर मे ध्वजारोहण किया एवं समारोह मे उपस्थित सभी अधिकारियों / कर्मचारियों के द्वारा राष्ट्रगान भी गाया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 'परियोजना अनुभाग' को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 'प्राइवेट एसईजेड अनुभाग' को तृतीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 'परियोजना अनुभाग' को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

कार्यालय में कार्यरत पांच अधिकारियों/कर्मचारियों श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय, सहायक विकास आयुक्त का दिनांक 12.10.2022 को एंव श्री प्रमोद कुमार, सहायक विकास आयुक्त, श्री सुनील कुमार गुल्यानी, आशुलिपिक, श्री अरूण सिह परिहार, आशुलिपिक एवं श्री जाविर अली, आशुलिपिक की दिनांक 13.10.2022 को उच्च पदों पर पदोन्नत किया गया।

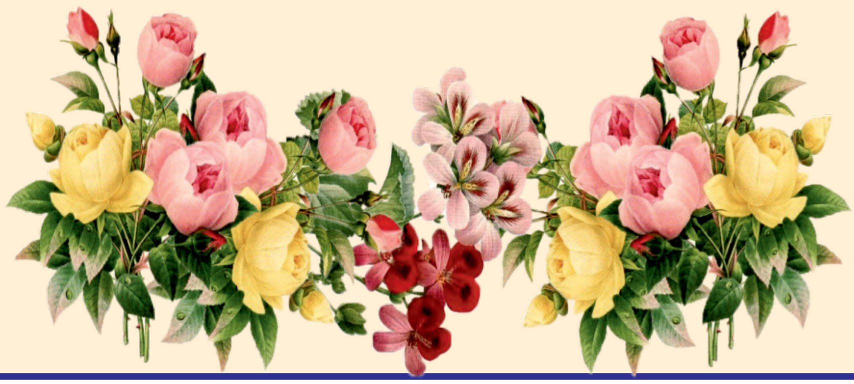

विकास आयुक्त कार्यालय एनएसईजेड में 10 अगस्त 2022 को हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता संग्राम प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

कार्यालय मे कार्यरत श्री ओम पाल, सुरक्षा रक्षक अपनी सेवा पूर्ण कर अपने पद से सेवानिवृत्त हुए । अपनी सेवा अवधि के दौरान उन्होंने कार्यालय की विभिन्न उपलब्धियों में अपना अहम योगदान दिया । श्री ओम पाल, सुरक्षा रक्षक का विदाई समारोह कार्यालय के सम्मलेन कक्ष मे दिनांक 30.07.2022 को विकास आयुक्त की अध्यक्षता में मनाया गया । सभी सहकर्मियों ने उनकों भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ दी ।

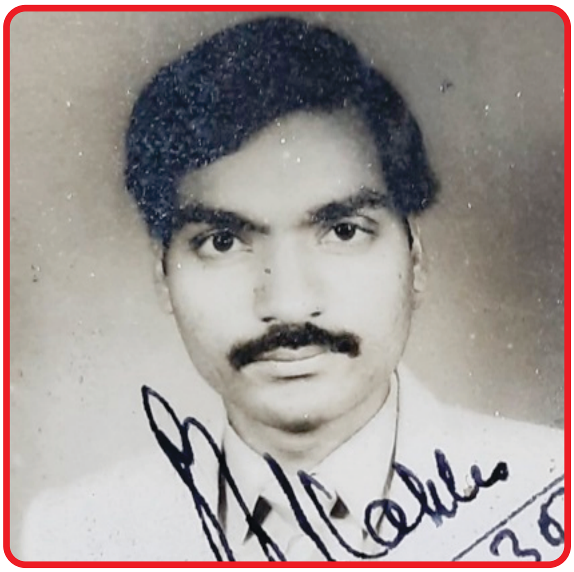

शोक समाचार

कार्यालय मे कार्यरत श्री बीर सैन, सहायक सुरक्षा अधिकारी का दिनांक 14.04.2021 को अचानक स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण देहावसान हो गया। अपनी सेवा अवधि के दौरान उन्होंने कार्यालय की विभिन्न उपलब्धियों में अपना अहम योगदान दिया ।

चमत्कार को नमस्कार

हमारे देश में लोग चमत्कारों miracles को बड़ा पसंद करते हैं। चमत्कारों की महिमा ऐसी है कि "चमत्कार को नमस्कार" एक मुहावरा बन पड़ा है। हम सभी ने किसी न किसी संत महात्मा, सिद्ध पुरुष अथवा पीर – फकीर के बारे में पढ़ा या सुना है जो पानी पर चलने, हवा में उड़ने, चीज़ों को प्रकट अथवा गायब करने, भूत–भविष्य बताने, बीमारी भगाने इत्यादि अत्यंत कठिन और प्रायः विज्ञान के नियमों को चुनौती देते दुसाध्य कार्यों को आसानी से करते प्रतीत होते हैं। चमत्कारों की हमारे यहाँ ऐसी महिमा और जनता के बीच ऐसा आकर्षण है की हमारे देश को चमत्कारों का देश कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। ऐसे में मैं आपसे एक ऐसे चमत्कार के बारे में बात करना चाहता हूँ जिसके सामने बाकी सारे चमत्कार तुच्छ साबित होते हैं। और वो चमत्कार हैं आप। जी हाँ, इस अनंत ब्रह्माण्ड की अनंत सम्भावनाओं में केवल आपका होना मात्रा ही एक असाधारण घटना है । क्या? आप सहमत नहीं हैं ? सात अरब से ज्यादा मनुष्यों और असंख्य जीवों से भरे इस विराट संसार में आपको अपना अस्तित्व अति साधारण बात मालूम पड़ती है? चलिए दो मिनट के लिए आपकी बात मान लेते हैं।

आपको पता है की ब्रह्मांड का इतिहास कितना पुराना है और इसका विस्तार कितना व्यापक है ? अधिकांश खगोलविदों का मानना है की ब्रह्माण्ड लगभग 14 अरब साल पहले एक बड़े धमाके Big Bang के साथ शुरू हुआ। उस समय संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक ही बिंदु में संकुचित था जो की एक सुई की नोक से हजारों गुना छोटा था और जितना गरम और सघन था की हमारी सोच और समझ से भी परे है। फिर अचानक बिग बैंग के विस्फोट से साथ ब्रह्माण्ड का जन्म हुआ और इसके साथ ही समय टाइम, स्थान स्पेस, पदार्थ मैटर का भी जन्म हुआ। सेकंड के एक छोटे से हिस्से में ही ब्रह्माण्ड एक परमाणु के आकार से एक आकाशगंगा गैलेक्सी से भी बड़ा हो गया और आज तक एक द्रुत गति से इसका विस्तार हो रहा है।

ब्रह्माण्ड की व्यापकता का अनुमान भी वैज्ञानिकों ने कर रखा है। ऐसा अनुमान लगाया जाता

है की ब्रह्माण्ड में सबसे दूर महसूस किये जाने वाले क्षेत्र भी 46 अरब प्रकाश वर्ष 46 Billion Light Years) दूर हैं। इस अंदाजे से ब्रह्माण्ड का व्यास 54 सेक्सटिलियन (54 sextilion अर्थात 54 के बाद 22 जीरो मील है। क्या यह एक साधारण बात है कि हम इतने पुराने और व्यापक और शानदार ब्रह्माण्ड का हिस्सा हैं? यही नहीं बल्कि आपके शरीर का एक एक कण उतना ही पुराना है जितना की समस्त ब्रह्माण्ड। और उस एक एक कण का मूल स्रोत वही है जिनसे सारे ग्रह, उपग्रह, तारे, धूमकेतु, उल्कापिंड इत्यादि बने हैं। और आप माने या न मानें जो ऊर्जा शक्ति आपके भीतर है, जिसने आपको चेतन एवं चलायमान कर रखा है, वही है जिसका उद्भव बिग बैंग से हुआ। आपको अभी भी लगता है आप साधारण हैं?

चलिए अपना दृष्टिकोण थोड़ा संकुचित करते हैं और अपना ध्यान अपने सौर मंडल और पृथ्वी पर केंद्रित करते हैं। इतने बड़े ब्रह्माण्ड में पृथ्वी एक धूल के कण के बराबर भी नहीं है फिर भी जीवन के उद्भव के लिए उपयुक्त स्थिति यहीं पर संभव हुई। आज भी वैज्ञानिकों ने हजारों ऐसे ग्रहों की खोज कर ली है जो की पृथ्वी जैसे प्रतीत होते हैं, फिर भी उसमें किसी भी प्रकार के जीवन की कोई भी सम्भावना अभी तक नहीं ज्ञात हुई है. इस सन्दर्भ में तो अपना गृह सबसे विशेष जान पड़ता है। उसमें भी यदि हम जीवन के अनेक प्रकारों और प्रजातियों के बारे में सोचें तो ऐसा लगेगा की उनकी विविधताओं और संख्या बल से आगे 7 अरब का मानव जनबल कुछ भी नहीं है। केवल प्रजातियों species की बात करें तो पृथ्वी को करीब करीब 87 लाख स्पीशीज ने अपना घर बनाया हुआ है और मानव homo sapiens उनमें से केवल एक प्रजाति है। यदि एक एक जीव की बात करें तो विभिन्न प्रकार के जीवों, जिनमें वृक्ष, शैल, कवक, जीवाणु इत्यादि मिलाकर कुल 20 quintillion अर्थात 20 billion billion दो के बार 18 जीरो हैं, इस बड़े जीव संसार में मात्र 7 अरब मनुष्य गणितीय रूप से तो केवल Rounding of error अर्थात नगण्य मालूम पड़ते हैं। यदि अब भी आपको आपके असाधारण होने का भान नहीं हो पा रहा है तो मैं आपको कहूंगा आप अपने आप पर ध्यान केंद्रित करें. आपका शरीर रचना, मष्तिष्क की जटिलता, विवेक, बुद्धि, नैतिकता का बोध, भाषा का ज्ञान इत्यादि अनेक विशेषताएं हैं जिसने आपको अन्य सभी जीवों से पृथक करता है।

यदि आपको वैज्ञानिक तर्क युक्ति संगत नहीं लगे तो चलिए आपको सहित्य और दर्शन

की दुनिया में ले चलते हैं। मिर्जा गालिब ने अपने एक महान शेर में कहा है –

"न था कुछ तो खुदा था, न कुछ होता तो खुदा होता,
डुबाया मुझको उन्होने, न होता मैं तो क्या होता"

गालिब कह रहे हैं की जब कुछ नहीं था हमारे अनुसार आप इसे बिग बैंग के पहले का समय मान सकते हैं तो परमात्मा का ही अस्तित्व था. यदि यह ब्रह्माण्ड नहीं होता तो भी वही परम सत्ता विद्यमान रहनी थी। इस दृश्य संसार के होने के कारण ही मैं मेरा अस्तित्व, मेरा अहंकार हूँ, यदि ये संसार न होता तो मैं क्या होता? अर्थात उस परिस्थिति में तो सब कुछ परमात्मा ही होते और मैं भी परमात्मा का अंग ही होता ! यद्यपि गालिब यहाँ परमात्मा की बात कर रहे हैं, फिर भी यदि आप नास्तिक हैं, तो परमात्मा के स्थान पर जिस भी परम सत्ता को आप बिग बैंग का कारण मानते हों उसको रख दें – हमारे तर्क का बल कमज़ोर नहीं होगा. इसी बात को शंकराचार्य अलग प्रकार से कहते हैं – "ब्रह्म सत्यम जगत मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापराह" अर्थात जीव परमात्मा जिसको उन्होंने ब्रह्म की संज्ञा दी है से अलग नहीं है। उपनिषदों ने इसी बात को "अहम् ब्रह्मास्मि" अर्थात मैं ब्रह्म हूँ – के द्वारा समझने की कोशिश की। यही कारण है की स्वामी विवेकानंद ने जीव को शिव की संज्ञा दी।

इसीलिए यदि मुझे भी चमत्कार को नमस्कार करने को कहा जाये तो मैं मात्र आपको नमस्कार करके इस कर्तव्य की पूर्ति कर लूंगा।

नमस्कार।

श्री अमित कुमार गुप्ता
उपायुक्त (सीमा शुल्क)

प्रश्न ?

श्री विशाल बाबू एक ऊँचे घराने से सम्बन्ध रखते है। आप अपने नाम के अनुरूप काफी भारी–भरकम देह–दशा रखते है। आपको देखकर कदाचित लोगो को अंग्रेजो के जमाने के जमीदार नजर आते हैं, एक–आध सेर मिठाई तो आप ऐसे चपत कर जाते है जैसे कि खाया ही नहीं ? कद काठी में 6 फीट 90 किलो वजन और मधुमेह की बीमारी के बाबजूद किसी तरह के परहेज से तब तक बचते है, जब तक कि कोई कुछ खाने का आग्रह न करे या फिर घर के लोगो से दबाब न बने। मिजाज हमेशा मस्त और दूसरो के हित चाहने वाला। ऐसे व्यक्ति बिरले ही समाज मे होते है। इनकी पत्नी स्वभाव से बहुत ही शांत मृदुभाषी और धार्मिक प्रवृति की हैं। आपके दो पुत्र और एक पुत्री है। आपका परिवार काफी सामाजिक है और रिश्ते के ताने – वाने के वावजूद सभी रिश्तेदारों से अच्छे सम्बन्ध बना के रखते हैं। यह कहानी इनके छोटे पुत्र, जिसका नाम संजय है, पर मुख्यतः आधारित है ,प्यार से लोग इसको हँसमुख भी कहते हैं।

जैसा नाम, वैसा काम । दिन भर हँसते रहना,लोगो के साथ हंसी ठिठोली करना, खेल– कूद में व्यस्त रहना, यह उसके प्रमुख कार्यो से एक था । पढाई में अब्बल दर्जे में होने के बाद भी नौकरी में नहीं गए या कह सकते हैं कि समय ने मौका नहीं दिया ।

श्री राधेश्याबाबू बगल के गाँव में ग्रामसेवक थे । उनका गाँव वहाँ से 80 किलोमीटर की दूरी पर था, अतः गाँव आना – जाना महीने में एक–आध बार हो जाता था। मृदुभाषी सच्चरित्र, धीर गंभीर आदि उनका स्वभाव था । कह सकते है कि वह अच्छे इन्सान थे । भगवान ने उन्हें चार पुत्री और एक शानदार पुत्र से नवाजा था ।

इनमे सबसे बड़ा पुत्र था और फिर चारो पुत्री। सबसे बड़ी पुत्री का नाम मुस्कान था उसका रूप वर्णन तो कागजो पर नहीं उकेडा जा सकता। फिर भी कुछ बर्णन तो किया ही जा सकता है। वह सामान्य कद–काठी की थी,लेकिन रूप से इतना सुंदर कि देखने वाले तो इस कल्पना में ही रहते थे कि ऊपर वाले ने इसको बहुत फुर्सत में बनाया है। गोरी– चिट्टी

हँसमुख चेहरा,काले नैन और घुँघराले बाल। जब वह चलती तो फूल भी सरमा जाते, सड़के रास्ता छोड़ देती थी, एक अलग तरह कि हलचल होती थी। वह अपने नाम के अनुरूप सब जगह मुस्कुराहट भर देती थी। कुल मिलाकर उस गाने की याद आती है जो बहुत साल पहले चल चित्रों मे उकेड़ा गया था "तारीफ करू क्या उसकी जिसने तुम्हे बनाया "

जेठ कि दुपहरी वर्ष 1987 दसवीं कि परीक्षा चल रही थी, संजय के भी किसी दोस्त के भाई का पेपर था जो कि मुस्कान के गाँव से ताल्लुक रखता था। यही पर एक दिन संजय ने मुस्कान को देखा और देखता ही रह गया। अब तो वह परीक्षा के बहाने उसको देखने वहाँ पहुँच जाया करता था। वह उसके प्यार मे दीवाना सा हो गया कि उसको देखने अपने दोस्त के माध्यम से उसके गाँव आना–जाना शुरू कर दिया। आगे चलकर उनके प्रेम परवान चढ़ने लगे, लेकिन तब। केवल माता– पिता या परिवार के लोगों की सहमति से ही रिश्ते बनते थे। परिणामस्वरुप, काफी दिनों तक मामला शांत सा रहा लेकिन आग दोनों तरफ लगी हुई थी, एक दिन राधेश्याम जी की पत्नी ने जैसा कि सभी मध्यमवर्गीय परिवारों में होता है कहा कि बेटी जवान हो गई है, अब इसके हाथ पीले कर देते है। ऐसी बात सुनकर राधेश्याम जी थोड़े से विचलित हुए। क्योकि, उन्हें तो चार पुत्रियों का समयानुसार हाथ पीले करने थे, लेकिन समस्या थी कि लड़का कहाँ ढूंढे, आमतौर पर बेटियों का लगाव अपनी माँ से ज्यादा होता है। मुस्कान ने जैसे–तैसे अपनी पसंद माँ के सामने रख दी। माँ ने यह बात राधेश्याम जी को बताई।

राधेश्याम जी संजय के परिवार और संजय के बारे में जानते थे क्योंकि उनकी तैनाती बगल वाले गाँव में थी। लेकिन, दहेज कि वजह से सकुचा रहे थे, सोचा 4 बेटियां है कहाँ से इतने पैसे लाऊंगा। इतनी तनख्वाह में तो घर का गुजारा भी मुश्किल से हो पाता है। फिर भी हिम्मत करके विशाल बाबू से बात की। कई दौर की बातचीत के बाद बिना दहेज की शादी तय हो गयी, क्योंकि लड़का और लड़की दोनो राजी थे।

शादी बड़े धूमधाम से हुई। राधेश्याम जी ने बारातियों का स्वागत बड़ी ही धूम–धाम से किया। कुल मिलाकर, दूल्हा–दुल्हन दोनों पक्ष के सभी लोग खुश थें।

3–4 वर्षो तक सब ठीक चला, काफी खुशी का माहौल रहा। मगर, होनी को कुछ और ही मंजूर था। क्योंकि, इसके बाद इस परिवार पर दुःखों का पहाड़ ही टूट के आ गिरा।

संजय मोटर साइकिल दुर्घटना में बुरी तरह से घायल हो गए। शरीर के सारे अंग लगभग क्षत–विक्षत से हो गये । दैवीय कृपा कहे या कुछ और सर में चोट नही लगी ।

दुर्घटना के तुरंत बाद उन्हें चिकित्सक के क्लिनिक पर लाया गया, जहाँ उनका इलाज शुरू हुआ। 3 वर्षो तक इलाज के उपरांत वह पुनः ठीक–ठाक अवस्था में आ गए।

घर में एक बार फिर से खुशियों का आवागमन हुआ और घर खिलखिला उठा। अगले 3–4 वर्षो तक घर में काफी आनंद का माहौल रहा। विकास अपने परवान पर थी। इस दौरान एक सुन्दर सी परी का अवतरण हुआ। अब संजय नौकरी के लिए भी पैर–बढ़ा चुके थे,उन्हें, एक सरकारी विभाग मे नौकरी भी मिल गई ।

लेकिन, होनी को कुछ और ही मंजूर था। एक बार पुनः संजय बीमार हो गए। इस बार डॉक्टर ने ये कहा कि दुर्घटना के समय दिए गए एन्टीवॉयोटिक दवाओं की वजह से उनके गुर्दे ने काम करना बंद कर दिया है।

फिर, गुर्दा रोग विशेषज्ञ, बड़े– बड़े अस्पतालों का दौर शुरू हुआ। पैसा तो इस तरह खर्च हो रहा था मानो बाढ़ का पानी । घर के सारे सदस्य परेशान रहते थे । 'मुस्कान' जिसे बड़ी सोच के साथ भगवान् ने बनाया, बड़े ही प्यार से बाबूजी ने नाम रखा। आज उसके पास अपने नाम के अलावा कुछ नही बचा था। किस्मत भी कई बार बहुत क्रूर होती है।

अब गुर्दा प्रत्यारोपण की बात चल रही थी क्योंकि संजय अब डायलिसिस पर थे। गुर्दा प्रत्यारोपण में काफी खर्च था जिसकी व्यवस्था के लिए घरवाले बहुत परेशान थे और सजय जिन्होंने जिंदगी में किसी को परेशान नहीं किया, वो अपने घरवालो की ऐसी हालत देखकर खुद ही परेशान थे। लेकिन, वे वास्तविकता को समझते थे। चूँकि उन्हें किसी को परेशान करने की आदत तो थी नही, तो एकदिन चुपके से उन्होंने बैकुंठधाम जाने का फैसला मन ही मन कर लिया। पहले पत्नी और बेटी जो 9 महीने की थी विदा किया इस बहाने से कि कल

से नवरात्र शुरू हो रहे है,तुम गाँव जाओ और पूजा– पाठ शुरू करो और अगले दिन दिल का दोरा पड़ने के कारण अपनी माँ समान भाभी की गोद में इस संसार को अलविदा कह गए।

यह घटना इस गाँव से उस गाँव, इस नगर से उस नगर जिसने भी सुनी, बिना रोये ना रह सका। गाँव तो एक मुर्दाघर जैसा दिख रहा था, मानो ऐसा लग रहा था जैसे की सब कुछ खत्म हो गया।

काफी समय बाद मुस्कान की उम्र देखकर किसी ने उनको दोबारा शादी की चर्चा की । लेकिन, गाँव के कुछ बड़े–बुजुर्गो ने यह कहकर की हमारी जाति में दूसरी शादी नही होती। तो फिर शादी नही हुई मुस्कान की उम्र 25 साल की थी जब वो अकेली हो गई। उसके जीने का एकमात्र सहारा उसकी बेटी थी। घर के लोग उसकी बहुत इज्जत करते है, लेकिन उसका घर अभी भी सूना पड़ा है। कालांतर में, 4 वर्ष के बाद पुत्र वियोग में पहले सास और फिर पत्नी के स्वर्ग सिधारने के 3 वर्ष बाद विशाल बाबू भी स्वर्ग सिधार गए।

यह कहानी एक सच्ची घटना पर आधारित है। मिलती–जुलती कहानी एक चलचित्र द्वारा जिसका नाम "पगलैट" है दिखाया गया है। पाठको से अनुरोध है की कृपया इस कहानी को पढ़े साथ ही ऊपर के चलचित्र को देखे तथा यह बताये कि समाज को क्या करना चाहिए था। जो नही किया गया आपके जवाब अपेक्षित होंगे।

अजय कुमार मिश्र
वरि. लेखाधिकारी
एन.एस.ई.जेड. नोएडा

योग एक अनुभव

मुझे याद नही कि मैने पहली बार योग कब किया था लेकिन योग का इतिहास काफी पुराना है । कहते है कि इसकी शुरुआत 5000 वर्ष से भी अधिक समय पहले हुई । जैसा कि हम सभी जानते है कि 21 जून प्रतिवर्ष हम विश्व योग–दिवस के रूप में मनाते है और इसकी शुरुआत हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने की, इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा कि जाए वो काफी कम है ।

जैसा हममे से अधिकांश महर्षि पतंजलि को इसका जनक मानते है उसी –तरह आने वाली पीढ़ी । योग के अंदर शारीरिक क्रिया–कलाप के अतरिक्त प्राणायाम और ध्यान को भी हम रखते है या रख सकते है ।

जैसा कि हम सभी जानते है कि किसी का भी जीवन चाहे जो इंसान हो या कोई और साँसों से शुरू होकर साँसों पर ही खत्म हो जाती है । प्राणायाम भी एक ऐसी ही क्रिया है । प्राणायाम का मतलब प्राण जोड़ आयाम यहाँ प्राण का मतलब साँसों से है अर्थात जो प्राणों को आयाम दे सके।

जैसा कि अपने देखा होगा कि कुछ लोग बहुत जल्द अपना आपा खो देते है तो उसके लिए अनुलोम दृविलोम एक लाभप्रद क्रिया होती है । आजकल कपाल– भाति के बारे मे सभी जानते है ये क्रिया हमें पेट कि बहुत सारी बीमारियों जेसे पेट में पथरी गैस बनना अदि में लाभप्रद होती हैं । कई सारे प्राणायाम के भाग है– जो किसी न किसी रूप मे लाभप्रद है ।

योग का ही एक रूप ध्यान है । ध्यान की क्रिया पूरी तरह से हमें आनंद देती है । ध्यान एक मुश्किल आसन है । लेकिन निरंतर अभ्यास करने से यह आसान हो जाता है । आप एक नए तरह का आनंद अपने जीवन में महसूस करेगें । बड़े– बड़े ऋषि–मुनि और महापुरुष ध्यान के मध्यम से सिद्धि प्राप्त कर चुके है।

कुछ लोग सोचते है कि निरंतर योग से वजन कम होता है । में ऐसा नहीं मानता क्योकि मुझे इसका लाभ नहीं मिला । वजन कम करने के लिए योग के साथ भोजन पर भी नियंत्रण

जरुरी है । परन्तु योग के कुछ शारीरिक गतिविधि से सम्बंधित क्रियाऐ है ,जिनमे से कुछ की चर्चा में नीचे कर रहा हूँ ।

1. सूर्य नमस्कार – इसमे 12 अलग–अलग आसन है । नाम सूर्य नमस्कार है लेकिन सूर्य से कोई लेना–देना नहीं है। हाँ, 12 आसन को प्रतिदिन 12 बार करने मे आपके मुख पर सूर्य जैसा तेज जरुर आ जाता है। इसको करने से आपके शरीर के प्रत्येक भाग में एक अजीब सी स्फूर्ति आती है ।

2. भुजंग, आसन, पर्वत आसन, शशांक आसन, घुड़ दोड़ – इनमे से भुजंग आसन और पर्वत आसन, सूर्य नमस्कार में भी करते है, ये चारों क्रिया आपके कमर–दर्द, घुटना आदि में काफी लाभप्रद है।

चूँकि योग में कई क्रियाऐ है सबका जिक्र तो में यहाँ नही पर पाऊँगा। लेकिन इतना दावे के साथ कह सकता हूँ । कि योग आपको मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है। आर्थिक इसलिए कि आपको चिकित्सक के पास जाने की जरुरत नही पड़ती। मै मधुमेह से पीड़ित हूँ और पिछले 6 वर्षो से मेरा मधुमेह स्तर 100 के आसपास होता है। मेरी दवाईयाँ भी काफी कम की गई।

और अंत में यह कह सकता हूँ कि योग की वजह से में स्वस्थ हूँ । योग महसूस करने की वस्तु है, ये आपको अन्दर से महसूस होगा किसी के कहने–सुनने से कोई फर्क नही पड़ेगा। अतः आप सब भी अपने नित्य दैनिक क्रियाओ में इसको शामिल आप स्वस्थ रहेंगे और आप स्वस्थ रहेंगे तो देश भी स्वस्थ रहेगा।

"योग मतलब मन की स्थिरता"

अजय कुमार मिश्र
वरि. लेखाधिकारी
एन.एस.ई.जेड. नोएडा

मैं एक देश हूँ

मैं एक देश हूँ, भाषा न कोई वेष हूँ
मेरे आँचल में लहलहाते हैं, फूलों के चमन
पाँव धोते हैं, नदी नाले समंदर ये गगन
मेरी गोदी में फलें, फूलें मेरे लाल सभी
इनके सुख–दुख में सदा साथ इक परिवेश हूँ
मैं एक देश हूँ भाषा न कोई वेश हूँ

एक मंदिर हूँ जहाँ शीश झुकाता है कोई
एक मस्जिद हूँ नमाजों से मनाता है कोई
कभी गिरजाघरों की प्रार्थना से सजता हूँ
गरू के ग्रथ की वाणी में सजा वेश हूँ
मैं एक देश हूँ, भाषा न कोई वेश हूँ

मुझको बाँटो न, इक पिता की तरह रहने दो
अपनी आजाद हवाओं के संग बहने दो
हिमालय सा अडिग, गंगा की तरह पावन हूँ
सभी धर्मों को साथ रखने का संदेश हूँ
मैं एक देश हूँ। भाषा न कोई वेश हूँ।

श्रीमती उषा उपाध्याय
पत्नी श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय
सहायक विकास आयुक्त
एन.एस.ई.जेड. नोएडा

कार्यालय परिसर के निवासियों की काल्पनिक मनोदशा पर आधारित चंद हास्य पंक्तियाँ

"साहब का साईरन"

सड़क पर साईरन बजा तो सोचा साहब आ गए,
चेहरे पर मेरे मानो बादल से छा गए ।

सिर उठाकर घडी देखी तो पता चला अभी तो 9 ही बजे हैं,
मन ही मन सोचा, चलो बच गए अभी तो मजे ही मजे हैं ।

एक साईरन और बजा, मानो साईरन पीछे पड़े हों,
साहब हमारे मानो सामने ही खड़े हों।

तभी किचन से आवाज आई, अजी सुनते हों,
तुम्हारे साहब कब के आ चुके, तुम अभी यहीं खड़े हों ।

मैंने बोला, ये साहब नहीं कोई और अधिकारी होंगे,
हमारे साहब आज बाहर गए हैं, ऑफिस नहीं आ रहे होंगे ।

सोचा क्यों न आज पत्नी जी से दो मीठी मीठी बातें ही कर लें,
तभी बाहर से आवाज आई, चलो भाई जल्दी से बाहर आओ, ऑफिस चलें ।

वाह रे दोस्त, दोस्ती का फर्ज तुमने क्या खूब निभाया,
एक आवाज देकर, सहज ही, कर्तव्य पथ पर हमें लगाया ।

श्री प्रमोद कुमार
सहायक विकास आयुक्त
एनएसईजेड, नोएडा

तीन पहर

तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

सब कुछ पाया इस जीवन में,
फिर भी इच्छाएं बाकी हैं
दुनिया से हमने क्या पाया,
यह लेखा – जोखा बहुत हुआ,
'इस जग ने हमसे क्या पाया,
बस ये गणनाएं बाकी हैं।'

इस भाग–दौड़ की दुनिया में
हमको इक पल का होश नहीं,
वैसे तो जीवन सुखमय है,
पर फिर भी क्यों संतोष नहीं !

क्या यूं ही जीवन बीतेगा,
क्या यूं ही सांसें बंद होंगी ?
औरों की पीड़ा देख समझ
कब अपनी आंखें नम होंगी ?
मन के अंतर में कहीं छिपे
इस प्रश्न का उत्तर बाकी है।

मेरी खुशियां, मेरे सपने
मेरे बच्चे, मेरे अपने
यह करते – करते शाम हुई
इससे पहले तम छा जाए
इससे पहले कि शाम ढले

कुछ दूर पराई बस्ती में
इक दीप जलाना बाकी है।
तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

जीवन की सारी दौड़ केवल अतिरिक्त के लिए है! अतिरिक्त पैसा, अतिरिक्त पहचान, अतिरिक्त शोहरत, अतिरिक्त प्रतिष्ठा, यदि यह अतिरिक्त पाने की लालसा ना हो तो जीवन एकदम सरल है. आइए, मंथन करे ।

श्री हरी किशन मीना
सहायक विकास आयुक्त
एनएसईजेड, नोएडा

काश मेरी तकदीर

काश मेरी तकदीर ने भी मेरा साथ निभाया होता।
पैरो में उनके जन्नत रख देता,
अगर वक्त ने मुझ पर,
थोड़ा सा करम दिखाया होता।
काश मेरी ....

कर्म तो करते रहे
वो बिन कहे रात दिन अपना,
काश वक्त ने भी अपना,
थोड़ा सा करम निभाया होता।
काश मेरी................................

खुदा तू भी हार जाता उस वक्त,
जब तूने माँ बाप को आजमाया होता।
गिला तो नही है मुझे तुझसे ऐ कुदरत,
मजा तो जब आता जीने में,
जन्म के साथ साथ तूने,
तकदीर लिखने का हक भी,
माँ बाप का बनाया होता।
काश मेरी..................................

श्री हरी किशन मीना
सहायक विकास आयुक्त
एनएसईजेड, नोएडा

व्यापारिक स्वतंत्रता-एक विश्लेषण

हाल ही में देश ने स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगाठ मनाई । इन 75 सालो में देश ने एक लम्बा सफर तय किया और सामाजिक, राजनितिक तथा आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया । आज हम डॉलर 3.53 ट्रिलियन की जीडीपी के साथ विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यस्था है, जो 6%– 8% की स्वस्थ्य दर से निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है । इन सब के बीच आज देश में एक सशक्त स्टार्टअप इकोसिस्टम भी मौजूद है जो अब तक 60,000 से अधिक स्टार्टअप को जन्म दे चुके है जो 56 से अधिक सेक्टर्स में कार्यरत है और 6 लाख से अधिक लोगो को नौकरिया प्रदान कर रहे है। इनमे से 106 स्टार्टअप ऐसे हैं जिन्हें यूनिकॉर्न का दर्जा मिल चुका है जिनका कुल मुल्यांकन 343 बिलियन डॉलर है। इन यूनिकॉर्न ने अबतक कुल 94 बिलियन डॉलर की वित्तपोषण भी प्राप्त की है। यूनिकॉर्न शब्द का संबोधन एक बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य के साथ किसी निजी स्टार्टअप कम्पनी का वर्णन करने के लिए किया जाता है। सरल शब्दों में यह स्टार्टअप इकोसिस्टम रुपी बगीचे में पल रहे वो नन्हे पौधे है जिनमे अभूतपूर्व क्षमता है और इन्ही में से कुछ विशालकाय वृक्ष का रूप लेते हुए अगली एप्पल, अमेजन या टेस्ला जैसी कम्पनीयां बनने के लिए समर्थवान है ।

आजादी के वक्त देश में समस्याओं का अम्बार था, एक तरफ साम्प्रदयिक दंगे हो रहे थे तो दूसरी तरफ अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी मूलभूत समस्यायें अपने चरम थी। इन सबके बीच रियासतों का एकीकरण करना, एक मूलभूत ढाचे की परिकल्पना तथा रूप प्रदान करना और आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना जैसी प्रमुख चुनौतियाँ भी थी। इन विषम परिस्थितियों में देश ने एक मिश्रित अर्थ व्यवस्था के रूप में अपने कदम बढाए, लेकिन झुकाव समाजवाद की तरफ ज्यादा था और निजी क्षेत्र को सीमित उद्योगों में ही कार्य करने की अनुमति थी। एक तरफ सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को पुरे देश भर में स्थापित किया गया तथा दूसरी ओर निजी क्षेत्र में कई तरह के लाइसेंसिंग, कोटा तथा अन्य तरह की औपचारिकताओं का पालन अनिवार्य कर दिया गया। इन सब के बीच देश अपनी पञ्चवर्षीय योजनाओ के साथ विकास की ओर अग्रसर होता गया। परन्तु सरकारी क्षेत्र के उद्दम पूरी

तरह से उदेश्यों की पूर्ति करने में विफल हो रहे थे और देश के संसाधनों का उपार्जन करने के बजाय घाटे में चल रहे थे ।

इन सब परिस्थियों में देश आर्थिक तंगी की ओर अग्रसर होता गया और 1991 के खाड़ी युद्ध की वजह से तेल की कीमतों में आयी अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी की वजह से देश ऐसी स्थिति में पहुच गया जहाँ विदेशी मुद्रा भंडार मात्र 1.2 बिलियन डालर रह गया और अत्यधिक बाह्या ऋण की वजह से देश में गंभीर आर्थिक संकट आ गया। इन सबके बीच देश ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय लिया और उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की आधारशिला पर नीतिओं में अभूतपूर्व सुधार कार्यक्रम शुरू किये। इन सुधार कार्यक्रमो को लेकर आना एक बड़ी घटना थी जो देश की मिश्रित अर्थव्यस्था का झुकाव सरकारी क्षेत्र से हटा कर निजी क्षेत्र की तरफ बढाया और सही अर्थो में देश में निजी क्षेत्र को व्यापारिक आजादी प्राप्त हुई ।

देश ने 1991 के बाद उदारीकरण की राह पर चलते हुए पिछले 30 वर्षो में अभूतपूर्व विकास किया और नयी उचाईयों को हासिल किया। आज देश की अर्थव्यवस्था अपने स्वर्णिम युग में प्रवेश कर चुकी है और आने वाले 25 वर्षों में देश एक विकासशील अर्थव्यस्था से आगे बढ़कर एक विकसित अर्थव्यस्था और महाशक्ति होने की राह में अग्रसर है और हम उस सफर के सौभाग्यशाली प्रत्यक्ष्यदर्शी है । आज देश की स्टार्टअप इकोसिस्टम ने अभूतपूर्व प्रगति कर ली है और उद्दम पूंजी वित्तपोषण के तहत बहुतायात में वित्त देने वाले उपलब्ध है, देश के युवाओं को स्वर्णिम अवसर है कि वो इस व्यवस्था एवं संसाधन का उपयोग करते हुए अपने नए व्यापारिक विचार जो मानव जीवनशैली को बदलने तथा विकास करने की क्षमता रखती हो वो वैश्विक मंच पर लेकर आये और आर्थिक प्रगति में भागिदार बनते हुए देश को विश्वपटल में नई ऊँचाईयो पर पंहुचा सके ।

विवेक केसरवानी
निवारक अधिकारी
एनएसईजेड, नोएडा

राह पकड़ तू एक ऐसी

राह पकड़ तू एक ऐसी,
चलाचल उस पर प्रतिदिन प्रतिक्षण ।
निडर, अविचल होकर अनुसाशित,
कर अपने हर कार्य तू संपादित ।।

हो राह कैसी, इसकी सोच भी है जरूरी,
हृदय में स्फुटित विचार भी नेक जरूरी ।
यदि हो तनिक भी अपने विचार सशंकित,
ले मदद किसी की, न कर तनिक भी देरी ।।

लेखक कहता – बात निज मन की,
राह पकड़ तू ऋषि–मुनियों, योगी–जनों की,
नानक–गुरुजन और पीर–फकीर की ।
जो स्वयं चले राह सर्वोत्तम,
किया स्वयं संग विश्व–कल्याण अति–उत्तम ।।

राह पकड़ तू एक ऐसी ।
राह पकड़ तू एक ऐसी ।।

लक्ष्मण कुमार
निवारक अधिकारी
एनएसईजेड, नोएडा

मदद

एक नन्हा परिंदा उड़ान भरने की कोशिश करता, पर बार–बार कुछ ऊपर उठकर गिर जाता । दूर से एक अनजान परिंदा अपने मित्र के साथ बैठा यह सब गौर से देख रहा था । कुछ देर बाद वह नन्हे परिंदे के पास पहुँचा और बोला – क्या हुआ, बहुत परेशान हो ? नन्हा परिंदा बोला – मुझे शाम होने से पहले अपने घोंसले तक लौटना है। उड़ान भरना अभी ठीक से नहीं आता।

क्या आप मुझे उड़ना सिखा सकते हैं ? परिंदा बोला – जब सीखा नहीं तो इतना दूर निकल आने की क्या जरुरत थी ? वह नन्हा परिंदे का मजाक उड़ाने लगा। अनजान परिंदा हँसते हुए बोला – देखो, हम तो उड़ान भरना जानते हैं और अपनी मर्जी से कहीं भी जा सकते हैं । इतना कहकर उसने नन्हें परिंदे के सामने पहली उड़ान भरी । वह फिर थोड़ी देर बाद लौट आया और दो –चार कड़वी बातें बोलकर फिर उड़ गया, ऐसा उसने पांच – छह बार किया।

लेकिन एक बार जब वह वापस लौटा तो नन्हा परिंदा वहाँ नहीं था। यह देखकर अनजान परिंदा खुश होते हुए अपने साथी से बोला – आखिर उस नन्हें परिंदे ने उड़ान भर ही ली । साथी बोला – तुम इतना खुश क्यों हो रहे हो ? तुमने तो उसका इतना मजाक बनाया। वह बोला – वास्तव में यह मेरा उड़ना सिखाने का एक तरीका था। मैं उसके लिए अजनबी था। मैं उसे सीधे तरीके से उड़ना सिखाता तो वह पूरी जिन्दगी मेरे एहसान तले दबा रहता । उसे दूसरों से मदद मांगने की आदत पड़ जाती । जब मैंने उसे कोशिश करते हुए देखा, तभी समझ गया था कि इसे बस थोड़ी सी दिशा देने की जरुरत है और वह मैंने बार–बार उसके सामने उड़ते हुए उसे दे दी, अब वो खुद उड़ता रहेगा और दूसरों से इसके लिए मदद कभी नहीं माँगेगा ।

विकास यादव
निवारक अधिकारी, एनएसईजेड

सच्ची मदद वही है, जो मदद पाने वाले को यह महसूस ही न होने दें कि उसकी मदद की गई है।

●●●

तिरंगा

तेरी आन रहे, तेरी शान रहे
तूही मेरा अभिमान रहे
मेरे देश के प्यारे तिरंगे
तुझसे मेरी पहचान रहे।

तू प्रतीक हमारे स्वराज्य का
संस्कृति सभ्यता को संजोया है
तुझमे बसता गौरव सबका
एकता अखण्डता को तूने ही पिरोया है।

सूरज सा "नारंगी" तेज है तुझमें,
शांति का "सफेद" संदेश है तुझमें,।
तुझमें खुशियों की "हरियाली" है,
तू चक्रवर्ती तूही शक्तिशाली है।

कितने लड़े शहीद हुए
तब जा कर तुझको पाया है
तू पर्याय हमारी संप्रभुता का
तुझे बलिदानो ने दिलवाया है।

तुझमे बसता बरसों का तप
शहीदों के रक्त ने तुझे तपाया है
तुझमे दिखता बापू, पटेल, चाचा का त्याग
तब जा कर मेरे तिरंगे
तू लहर लहर लहराया है।

तुझपर अर्पित सब तन मन धन
सर्वस्व तुझपर लुटाएंगे
तू मिला बहुत बलिदानो से
अब हर घर तिरंगा लहरायेंगे।

गौरव वाजपेयी
निवारक अधिकारी
एनएसईजेड, नोएडा

आजादी

चिड़िया चहकी डाली महकी
हर ओर बयार सी छायी है
मेरे भारत की आजादी की
नई सुबह अब आयी है।

मगरूर विदेशी, था क्रूर बड़ा
पर उनके समक्ष, था बापू खड़ा,
सत्य अहिंसा के शस्त्रों से
विजय उन्ही ने दिलवाई है
तब जाकर मेरे भारत के आजादी की
नई सुबह आयी है।

नई सुबह का नया रंग है
पूरा भारत अब एक संग है
यह आजादी का अमर पर्व है
जिसपर होता सबको गर्व है।

इस जतन को मिटने न देंगे
ऐ वतन तुझे झुकने न देंगे,
मेरी आन तूही, मेरी शान तूही
सबसे बढ़कर पहचान तूही,
तुझपर जीना तुझपर मरना
तुझपर अर्पण सबकुछ करना,
है कसम मुझे बलिदानों की
तेरी मिट्टी तेरी शानो की।

सबकुछ समर्पण कर जाएंगे
तुझपर सब अर्पण कर जायेंगे
तेरे लिए जी कर ए मातृभूमि
तुझपर ही न्योछावर हो जायेंगे।

गौरव वाजपेयी
निवारक अधिकारी
एनएसईजेड, नोएडा

जीवन के सार

हर नौजवान की बस यही पहचान हो
है जवानी देश की , देश पे कुर्रबान हो
जो नजर उठे कोई देश पे गद्दार की
तो चिता बने वहीं देश में गद्दार की
है तिरंगा लहरा रहा आन बान और शान से
है सलाम तुमको ऐ वीर, भारत देश महान से
गर्रजना की गूँज ये, वीरों की पहचान हो
है जवानी देश की देश पे कुर्रबान हो।

जो तिरंगा ले चले वीर भारत लाल है
गर्व है उनपे सभी को वो हमारी ढाल है
जागते है सरहदों पे, सोते है जब हम यहाँ
कैसे करें हम शुक्रिया तुम से है रोशन ये जहाँ
तुम हो हमारे नायक सदा से बस यही अब ध्यान हो
है जवानी देश की देश पे कुर्रबान हो।

तुमहो तो है दिवाली और है त्योहार ये
तुम हो तो है सलामत समाज और परिवार ये
तुमको ईश्वर सदा सेहत और उम्र दे
तुम हो तो है तिरंगे की सदा बहार ये
तुम्हारे हर बलिदान पे हम सभी को मान हो
है जवानी देश की देश पे कुर्बान हो।

रमेश कुमार
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

एक सवाल

जब सब है तू तो .... फिर गुनाह क्या है ?
अगर बंदे में भी है वो तो .... खुदा क्या है
जिस्म और रूह के बीच है जो कशिश
कोई बता ना सका की ये माजरा क्या है ?
अपने ही हाथों से बनाया था जिसे
उसी से माँगता रहता है, ये दुआ क्या है
अब अगर उसी बुत को खुदा कहता है
तो मेरे यार ये खुदा क्या है ?
पत्थर को खुदा मान मूढ़ बैठा है
वो पत्थर तो खुद तेरे ही आसरे में रहता है
मस्जिदों और मीनारों से रूकसती लेकर
वो दिलबर हमारे दिलों में रहता है
जिस्म तू भी है मैं भी, खुदा कोई नहीं
सब उसी से हैं, जात जुदा कोई नहीं
ये तो मजहब है, सियासी बाजी है
खून का रंग एक है इससे बड़ा सबूत कोई नहीं
गुमान ना कर हुस्न का ऐतबार कोई नहीं
जिस्म के अलावा रूह का लिबाज कोई नहीं
सब मिट्टी से बने हैं और इसमें ही फना होने है
इससे ज्यादा बंदे की औकात कोई नहीं
तू रहे तू और मैं, मैं ही रहूँ
ऐसे मिलने में मिलने का मजा कोई नहीं
जब तक मिटती नहीं दोनो में से एक की पहचान
तब तक समझो दरिया समुन्दर से मिला कोई नहीं।

रमेश कुमार
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

पल पल की कीमत

हर पल बहुत कुछ किया जाता है
हर पल बहुत कुछ जिया जाता है।

हर पल बहुत कुछ पाया जाता है
हर पल बहुत कुछ खोया जाता है।

हर पल बहुत कीमती सा होता है
हर पल बहुत जाया सा जाता है।

हर पल बहुत कुछ काटा जाता है
हर पल बहुत कुछ सिया जाता है।

हर पल उस पल का इंतजार रहता है
और जब आता है वो पल, तो पल में बीत जाता है।

रमेश कुमार
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

एक खोज.....

अक्सर इस अलौकिक जगह में
जंग और दीवारों के साथ।

जिसमें कोई स्थान नहीं है
वह अपने सांत्वना की खोज करता है।

आकाशगंगाओं से अधिक परे जटिल,
क्या उसमें ब्रह्मांड विधमान है।

वह अपनी पात्रता से अनजान है,
तार में लपेटा हुआ तार।

यदि वह भीतर पाता है,
उसे रुके बिना बढ़ना होगा।

रमेश कुमार
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

छात्र/व्यक्ति के जीवन में सफलता की ओर जाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

दृढः– संकल्पी और आत्मविश्वासी व्यक्ति यह कभी नही सोचता कि मंजिल के रास्ते में कितने रोडे है, वह अपनी धुन का पक्का होता है, उसे केवल अपना लक्ष्य दिखाई देता है। वह यह भी जानता है कि झूठ का सहारा लेकर बढने वाला व्यक्ति जुगनू की भाँति थोडे समय के लिए ही अपने शीर्ष पर रह सकता है। बुद्धिमान वही व्यक्ति है जो समय को पहचान के चले। वक्त पर काम समाप्त करना उन्नति का भण्डार खोलता है इसलिए वक्त से नही चूकना चाहिए। कहा भी गया है:–

आषाढ का चूका किसान, डाली का छूटा बंदर कही का नही रहता।
ज्ञान बांटने से बुद्धि कम नही होती बल्कि बुद्धि बढती है।
इसलिए हमेशा दूसरो को ज्ञान देने का विचार किया करें।

दर्पण – झूठ बोलने नही देगा।
ज्ञान – भयभीत होने नही देगा।
आध्यात्म – मोह करने नही देगा।
सत्य – कमजोर होने नही देगा।
प्रेम – ईर्ष्या करने नही देगा।
विश्वास – दुखी होने नही देगा।
कर्म – असफल होने नही देगा।

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

माँ बाप को भूलना नहीं

भूलो सभी को मगर माँ बाप को भूलना नही।
उपकार उनके अनगिनत है, इस बात को भूलना नही।
सोकर खुद गीले में तुम्हें सुलाया सूखे में
उनके इस उपकार को कभी भूलना नहीं।

उगली पकडकर चलना सिखाया।
कंधे पर बिठाकर संसार दिखाया।
नाम करोगे तुम रोशन उनके इस विश्वास को तोडना नही।
भूलो सभी को मगर माँ बाप को भूलना नही।

माँ की ममता ओर पिता के प्यार के जैसी कोई चीज नही।
जो माँ बाप का आदर न करें उससे ज्यादा कोई बदतमीज नही।
माँ बाप की डाँट ने जीवन को सुधारा, वरना हम आज होते अवारा।
फूल देकर हमें कहा, कांटो के लिए दामन है हमारा।

माँ बाप के अरमान को करना है पूरा।
ना करोगे माँ बाप की सेवा तो हमारा जीवन है अधूरा।
माँ बाप को अंधेरे में छोडकर कभी प्रकाश में दौडना नही।
नाम करोगे तुम रोशन उनके इस विश्वास को तोडना नही।

उपकार उनके अनगिनत है, इस बात को भूलना नही।
भूलो सभी को मगर माँ बाप को भूलना नही।

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

आवाज

प्यार तो सिर्फ प्यार है पढ़ने के लिए यूं निगाहें चाहिए।
प्यार कभी यकीं दिलाने के लिए मोहताज नही होता।

पत्थर के बने ताजमहल को भला याद कौन करता।
शाहजहाँ के दिल में गर मुमताज का राज नही होता।

काश हम भी दिल ही दिल गुनगुनाते इश्क के नगमे।
बेवजह कोई कभी भी हमसे ऐसे नाराज नहीं होता।

वे न समझना दुनिया को आशिकी का कदर ही नहीं।
शैल का हर घर ताज होता गर इश्क पे नाज नही होता।

कभी भी सीधे सादे लोगो को प्यार में धोखा मत देना।
क्योंकि कहते है खुदा की लाठी में आवाज नही होती।

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

माँ

माँ के लिए क्या लिखूं, मैं तो खुद माँ की एक लिखावट हूँ,माँ का ह्रदय इतना विशाल होता हैं. जो कि अपने बच्चो के सारे दुःख दर्द को अपने विशालकाय ह्रदय में समाहित कर लेती हैं और अपने बच्चो के सारे दुखों को हर लेती हैं, और अपनी सारी खुशियाँ अपने बच्चो पर न्यौछावर कर देती हैं, खुद भूखी रह कर अपने बच्चो का पेट सिर्फ और सिर्फ माँ ही भर सकती हैं, माँ के जैसा संसार में दूसरा ना कोई हैं और ना कोई होगा, जो बिना स्वार्थ अपना सारा प्रेम अपने बच्चो पर खुशी–खुशी न्यौछावर कर देती हैं इसलिए माँ शब्द पर "जाविर अली, आशुलिपिक" को दो मिसरे याद आ रहे है जो इस प्रकार है :–

माँ से अच्छा कुछ भी नहीं है!
माँ से सच्चा कुछ भी नहीं है!!

निर्मित होने को दी हो जिसने तन में जगह!
उस मन से अच्छा कोई नहीं है!!

अपनी मां की सूरत से बढ़कर!
होती दुनिया में कोई छटा नहीं!!

अपनी माँ के उपकारो का कर्ज!
कोई भी चुका सकता नहीं!!

उस ममता पर न्यौछावर मैं!
जिस प्यार से तूने पाला मुझको!!

तेरी चाहत का कर्ज ओ माँ!
मैं कभी चुका सकता ही नहीं!!

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

ग़ज़ल

मिसरा–जीतने का हर हुनर मुझको सिखाया आपने

इश्क की महफिल सजी है गीत गाया आपने।
दिल तो था टूटा हुआ मुखड़ा सुनाया आपने।

जीतने का हर हुनर मुझको बताया आपने।
हारने की क्या वजह थी यह सिखाया आपने।

धड़कनें क्या कह रही सुन जरा लेना इधर।
कह रही सारी खताएं कितना सताया आपने।

दूर थी मंजिल भी अपनी रास्ते खामोश से।
खुशियों की बारात को फिर से सजाया आपने।

थरथराते लब तुम्हारे यह नशीली सी नजर।
नजर से नजरें मिली तो जाम पिलाया आपने।

इश्क की दीवानगी पर कुछ न सूझा था तुझे।
याद कर आठों पहर अश्कें– नहाया आपने।

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

प्यारी भारत माँ

बड़ी अनमोल ममता थी मगर मुँह मोड़ आया है ।
मोहब्बत के लिए नाते सभी से तोड़ आया है।
निभाया खूब रिश्ता शहर में ससुराल वालों से ।
मगर वो गाँव में माँ को तड़पता छोड़ आया है।

ये हदें और सरहदें ही तो अपना पराया सिखाती है।
कौन रोक पाता है पंछियों की जब परवाज होती है।
कटता है कोई अंग देह से तो तड़प जाता है मानव।
सोचो इस धरती को बटता देख धरा कितनी परेशान होती है।।

बोल नहीं सकती लेकिन महसूस सब होता है।
जब बटता देख अपने अंग को उसका अंतर्मन खोता है।
दर्द से तड़पती हुई देख इस वसुंधरा को।
सीमा पर खड़ा भारत माँ का वो वीर सपूत रोता है।।

जंग अपनों की अपनों से है तो धर्म को क्यों बीच में लाएं हम।
चल सके एक ही राह पर ऐसा सर्वधर्म राह बनाएं हम।
ताकि हो सके विकास देश का।
लगाकर गले सभी को एक स्नेहिल हिंदुस्तान पाए हम।।

जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

लम्हे

एक दिन उम्र ने तलाशी ली,
तो जेब से लम्हे बरामद हुए

कुछ गम के थे,
कुछ नम से थे,
कुछ टूटे हुए थे,

जो सही सलामत मिले..
वो बचपन के थे..!!

"बचपन" कितना खूबसूरत था,
तब खिलौने जिंदगी" थे
आज "जिंदगी खिलौना" है

अरूण कुमार अग्रवाल
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

हकीकत

बेवजह कुण्डी खट–खटाया करो
आसपास के लोगों से मिलते रहा करो,
उनकी थोड़ी खैर खबर भी रखा करो।
जाने कौन कितने अवसाद में जी रहा है,
पता नहीं कौन बस पलों को गिन रहा है।
कभी निकलो अपने घरो से,
औरों के आशियानें में भी जाया करो।
कभी कभी अपने पड़ोसियों की कुण्डी,
तुम बेवजह ही खट–खटाया करो।

कभी यों ही किसी के कंधे पर हाथ रख,
साथ होने का अहसास दिलाया करो।
कभी बिन मतलब लोगों से बतियाया करो,
बिना जज किये बस सुनते जाया करो।
बहुत कुछ टूटे मिलेंगे, कुछ रूठे मिलेंगे,
जिन्दगी से मायूस भी मिलेंगे।
बस कुछ प्यारी सी उम्मीदें,

कभी उनके दिलों में जगाया करो।
ऐसा न हो फिर वक्त ही न मिले,
और मुट्ठी की रेत की तरह लोग फिसलते रहे।
यूं वक्त–बेवक्त ही सही,
लोगों को गले तो लगाया करो।

अरूण कुमार अग्रवाल
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

प्रेरक लघु कहानियाँ

पिछले दिनों रूस के निवर्तमान राष्ट्रपति श्री मिखाइल गोर्बाचोव 91 वर्ष की आयु में निधन हुआ। विश्व शान्ति के लिए उन्हें वर्ष 1990 के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके समय में USSR एवं पूरी दुनिया में perestroika (नव–सुधार) एवं glasnost (खुलापन) का बोलबाला रहा, कहना गलत नहीं होगा। कि श्री गोर्बाचोव अपने समय में नए राजनीतिज्ञों के रोल मॉडल थे। श्री गोर्बाचोव का समय में भारत एवं USSR के बीच दोस्ती के भी नए आयाम गढ़े गए।

नब्बे के दशक में लखनऊ विश्वविद्यालय की टैगोर लाइब्रेरी में मैंने रूसी भाषा से अनुदित कुछ प्रेरक हिंदी कहानियां पढ़ीं थीं अब, इतने समय बाद, उनमें से दो लघु कहानियों को श्री गोर्बाचोव को श्रद्वांजलि स्वरुप प्रस्तुत कर रहा हूँ स्मृति पर आधारित।

1. चीनी का स्वाद

एक नमक की खदान में एक चींटी एनी रहती थी जो बहुत चिडचिडी, उदास रहती थी और दुबली एवं कमजोर थी एक बार उसकी सहेली मेनी, जो कि चीनी की खदान में रहती थी, उससे मिलने आई। मेनी एक खुशमिजाज चींटी थी मेनी से अपनी सहेली की हालत देखी नहीं गयी और वो एनी को अपने साथ चीनी की खदान में ले गई। लेकिन चीनी कि खदान में जाकर भी एनी की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ।

यह देखकर मेनी को चिंता हुई वो एनी को लेकर अपनी रानी चींटी के पास गई रानी चींटी ने एनी का मुंह खोलकर देखा तो पाया कि उसमें तो नमक का ढेला फंसा हुआ है. पूछने पर एनी ने कहा कि उसने तो हमेशा नमक ही खाया है इसलिए वो नमक का ढेला साथ लेकर आई है। यह सुनकर रानी चींटी ने कहा कि यदि तुम्हें अपनी जिन्दगी में चीनी का स्वाद चखना है, तो नमक का स्वाद छोड़ना ही होगा। नमक का ढेला निकलने के कुछ दिनों के बाद एनी भी सभी चींटियों के साथ चीनी का स्वाद लेने लगी एवं खुश रहने लगी।

2. नदी जो तालाब बन गई

एक बार पहाड़ों से एक छोटी वेगवती नदी निकली। उसका लक्ष्य था सागर से मिलना पहाड़ों से गिरने एवं बरसात के उसका वेग और बढ़ता गया। उसने कहा और तेज। सबने कहा इसे कोई नहीं रोक सकता आगे बढ़ने और सागर से मिलने से। चलते–चलते नदी एक सुरम्य घाटी में पहुंची.चारों तरफ हरी–भरी वादियाँ, फूलों की खुशबू नदी को वो घाटी भा गई। घाटी ने कहा, तुम बहुत दूर से आ रही हो यदि तुम्हें जगह अच्छी लगी है तो कुछ दिन ठहर कर आराम कर लो। जाओ वैसे भी, तुममें इतना पानी है, इतनी शक्ति है, कि तेजी से बहकर कभी भी यहाँ से जा सकती हो।

तो, नदी वहां आराम करने ठहर गई। नदी को वो जगह बहुत अच्छी लगने लगी। कुछ दिनों बाद बरसात बंद हो गई। नदी में पानी आना कम हो गया। नदी अभी भी सोच रही थी कि वो तो अपनी ताकत से कभी भी उस जगह से निकल सकती है।

कुछ समय बीता। नदी ने देखा कि उसके तल पर हरी काई जमने लगी है। यह देखकर उसे होश आया कि बहुत ज्यादा समय हो गया आराम करते हुए। उसने आगे बढ़ने के लिए जोर लगाया पर यह क्या? वो आगे नहीं बढ़ सकी। सिर्फ अपनी जगह पर हिली–डुली। अब वो एक तालाब बन चुकी थी।

सुनील गुल्यानी
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

"लोकतंत्र का उत्सव"

मम्मी पापा, दादा दादी होकर तैयार कहाँ चले हो,
मैं भी आपके साथ चलूँगा मुझको भी तो बोलो,

पापा बोले नही–नही, अभी नही, पहले 18 के तो हो लो,
तब तुम्हारा भी वोट बनेगा, तब तुम भी साथ चलोगे,

मतदान में अपने पहले वोट पर तुम भी फिर इतराओगे,
लोकतंत्र के इस उत्सव का महत्व सबको बतलाओगे,

सफल राष्ट्र का निर्माण हो सके,
इस उत्सव का हिस्सा सबको बनाना है।

भारत भूषण
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

प्रिय मित्र

सुनने में आया है
उसका हाल अच्छा है।
मैं अब अपने घर को
लौट जाऊं यही सवाल अच्छा है।

प्रिय मित्र के चले जाने से
मेरा बेहाल होना अच्छा है।
मै गर भूल भी जाऊं तो
अपना ख्याल रखना अच्छा है।

जब वो हमसे खफा है
तो हम क्या करें यारों।
मै गर गलत हूं तो क्या
हुआ ख्याल अच्छा है।

जब वो चाहे जो कुछ
इल्जाम लगाऐ अनुज पर।
अब हम खामोश रहेंगें यही
प्यार के लिए अच्छा है।

अनुज दीक्षित
उच्च श्रेणी लिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

कुदरत

कुदरत कराती पीटी तब छल जो आगे होता
वो पीछे जो ऊपर होता वो इक पल में नीचे।
वो रहे आगे हम रहे पीछे इसका गम नहीं
लाख हो एक तरफ हम अकेले ही कम नहीं।

चल तुझे उसे इसे सबको माफ किया
कूड़ा करकट पत्थर कील काटें भाला
कांता तलवार चाकू अंजर खंजर आरी
सबको अपने आस पास से साफ किया।

अब इनाम ऊपर से मिलने दें किसने
बुरा किसने अच्छा किसने पाप किया
भूल तो कुछ नहीं सकते अंत तक हम
किसने है पैर खीचें किसने साथ दिया।

इंसान थे अन्न खाते थे समझते थे सबकी
ही चालाकियां उसका ही इनाम दिया
किसने बढ़ाया कद किसने घटाया पद
आंख बन्द कर सब कुछ आज याद किया।

सौ कुएं खोद देते नाखूनों से खार यह था
खूनी रिश्तों को तार–तार जार–जार किया
गलती मेरी ही कुछ रही शायद ज्यादा ही
नजरंदाज कर, बार–बार माफ किया।

चल हट उसे इसे सबको ही माफ किया
कोढ़, खाज, दाद, खुजली, दर्द, फोड़ा, फुंसी
बीमारी कीटाणु वायरस पई घुन, खटमल
सबको अपने आस–पास से साफ किया।

जो – जो इंसान बन बनकर आयेगा मेरी
जान धन दौलत हंसी खुशी ले जाएगा
जो–जो जानवर बन के आया वो अब
अपनी जान हमको देकर यहां जाएगा।

अभी दिल मन था मेरा धरती के बराबर
अब हो गया पूरे ही आसमान के बराबर
हम भी देखे राहु केतु मंगल शनि ग्रह
सारे ही कब तलक रहेंगे एक पर न्यौछावर।

मुन्त्याज़ खान
सहायक
एन.एस.ई.जेड. नोएडा

वतन की खातिर

वतन की खातिर सर्वस्व न्यौछावर करते हम।
तिरंगा झुकने ना पाये,
इसका ख्याल रखते हम।
मौत को गले लगाने में,
ज़रा ना हिचकते हम।
सर पर बांध कफन।
युद्ध भूमि में उतरते हम।
डर किस खेत की चिड़िया,
इसको ना जानते हम।
तिरंगा लिपटे हमारे बदन पर,
यही कामना करते हम।
बस देश की सुरक्षा बनी रहे,
इसके लिये ही
प्राण न्यौछावर करते हम।
जय हिन्द के उद्घोष से,
तरंगित शरीर लिये निकलते हम।
हे मातृभूमि। तुझे शत् शत् नमन
करते हम।

श्रीमति संतोष कुमारी
सहायक
एनएसईजेड, नोएडा

माँ

माँ तुम निर्मल, शीतल जल जैसी,
दुखों की अग्नि को ठंडा करती।
माँ तुम एक परिचारिका–सी,
मेरी हर समस्या का ईलाज करती।
माँ तुम मेरी रक्षक बनती,
मुझ पर आयी मुसीबत का
मुझसे पहले सामना करती।
माँ तुम मेरी सखी जैसी,
मुझ संग हंसी–ठिठोली करती।
माँ तुम मेरी गुरू जैसी,
नित नवीन ज्ञान मुझमें भरती।
माँ तुम जीवन का अमृत हो,
मेरे जीवन में जीवनी शक्ति भरती।
माँ ममता की छाया में
जीवन बीते मेरा सारा।

श्रीमति सोनिका
अवर श्रेणी लिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

रिश्तों का प्यार

जिंदगी मुझ पर भी कुछ रिश्तों का प्यार यूँ उधार रहने दें
बडा हसीन है ये रिश्तों का कर्ज मुझे बस कर्जदार रहने दें।

ये आंखे जो छलकती है कभी गम में या तो कभी खुशी में
मेरे लिए अपनी इन आंखों में सदा ये प्यार बेशुमार रहने दें।

चाहे लाख बदले मौसम या पतझड सावन बसंत बहार आए,
मेरी ख्वाहिश है जीवन भर यूँ ही तुम मुझे सदाबहार रहने दें।

महज रिश्तेदारी नहीं, ये बगिया तो है मौहब्बत और यकीन की
बिना शक शुभा स्नेह रूपी फूलों से गुलशन गुलजार रहने दें।

वो मस्ती वो शरारतें वो बचपन न तुम भूलों न हम भूलें कभी
बढती उम्र मन में खटास क्यों, दिल में जवां किरदार रहने दें।

बेहद सहमे–सहमे है लोग जीने के लिए जुबां धारदार रहने दें
वफा को भूल न जाए दुनिया, लोगों के दिल में एतबार रहने दें।

सना नाज़ पत्नी जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

पिता

एक बार एक पिता ने अपनी बेटी की सगाई कराई। लड़का बड़े अच्छे घर से था, लड़का किसी से भी फालतू बात नही करते हुए अपने जीवन मे आगे बढ़ने से सम्बंधित बातों पर विचार करता रहता था। लड़के की कामयाबी आखिर मे रंग लायी और वह एक बड़ा सरकारी ऑफिसर बन गया था । इसलिए माता–पिता दोनों बहुत खुश थे। लड़के के साथ लड़के के पूरे परिवार का स्वभाव भी बड़ा अच्छा था ! पिता को अपनी बेटी की शादी अच्छे घर में पक्का होने पर राहत भी महसूस हो रही थी। शादी से एक सप्ताह पहले लड़के वालों ने लड़की के पिता को अपने घर खाने पर बुलाया। उस लड़की के पिता की तबीयत ठीक नहीं थी फिर भी वो मना नही कर सके! लड़के वालों ने बड़े ही आदर सत्कार से उनका स्वागत किया। फिर लडकी के पिता के लिए चाय आई। लेकिन शुगर की वजह से लडकी के पिता को चीनी वाली चाय से दूर रहने के लिए कहा गया था। पिता अपनी लड़की के होने वाली ससुराल में थे, इसलिए उन्होंने बिल्कुल चुप रह कर चाय अपने हाथ में ले ली। चाय कि पहली चुस्की लेते ही वो चौक से गये ! चाय में चीनी बिल्कुल ही नहीं थी और इलायची भी डली हुई थी! वो सोच मे पड़ गये कि ये लोग भी हमारी जैसी ही चाय पीते हैं शायद। जब दोपहर में उन्होंने खाना खाया , वो भी बिल्कुल उनके घर जैसा। उसके बाद दोपहर में आराम करने के लिए दो तकिये, पतली चादर मौजूद थे। उठते ही उन्हें निम्बू पानी का शर्बत दिया गया।

वहाँ से विदा लेते समय लड़की के पिता से रहा नहीं गया तो वे हैरानी वश पूछ बैठे..... श्रीमान जी, मुझे क्या खाना है, क्या पीना है , मेरी सेहत के लिए क्या अच्छा है या डॉक्टरों ने मेरे लिए क्या वर्जित किया है, ये परफेक्टली आपको कैसे पता है ? पिता की पूरी बात सुनने के बाद बेटी कि सास ने धीरे से कहा कि कल रात को ही आपकी बेटी का फोन आ गया था और उसने बेहद विनम्रता से कहा था कि मेरे पापा स्वभाव से बड़े सरल हैं, बोलेंगे कुछ नहीं लेकिन प्लीज अगर हो सके तो आप उनका ध्यान रखियेगा ! पूरी बात सुनकर पिता की आंखों में पानी भर आया! लड़की के पिता जब अपने घर पहुँचे तो घर के ड्राइंग रूम में लगी अपनी स्वर्गवासी माँ के फोटो से हार निकाल दिया। जब पत्नी ने उनसे पूछा कि ये क्या कर

रहे हो तो लडकी के पिता बोले–मेरा आजीवन ध्यान रखने वाली मेरी माँ इस घर से कहीं नहीं गयी है , बल्कि वो तो मेरी बेटी के रुप में इस घर में ही रहती है! और फिर पिता की आंखों से आंसू छलक गये ओर वो फफक कर रो पड़े...साथ में माँ भी रोने लगी।

दुनिया में सब कहते हैं ना कि बेटी है, एक दिन इस घर को छोड़कर चली जायेगी लेकिन बेटियां कभी भी अपने माँ–बाप के घर से नहीं जाती, बल्कि वो हमेशा उनके दिल में रहती हैं। जिस घर मे बेटी है वह जन्नत के समान है।

सना नाज
पत्नी जाविर अली
आशुलिपिक
एन.एस.ई.जेड. नोएडा

मंगलसूत्र

कैसे कहूँ कितनी अच्छी लगतीं है कलाई मेरी।
पहनती हूँ जब हाथों में हरे रंग की चूडियाँ।

खाली होती है कलाई तो सारा घर सूना लगता है।
दिल में खुशी होती है जब हाथों में खनकती है चूडियाँ।

न कोई रहीस हो आप, न कोई करोड़पति हो।
पहनाई है जो अँगूठी आपने, जेब के खर्च से बचाये हो।

खिल रहा एक फूल मेरे इश्क की शाख पर।
जब से आपने मेरे गले में मंगलसूत्र पहनाये हो।

सना नाज़ पत्नी जाविर अली
आशुलिपिक
एनएसईजेड, नोएडा

बेटियाँ

बेटियों से है रोशन जहान,
बेटियों से ही उन्नत हिंदुस्तान।

कल्पना, मैरीकॉम यहां जन्मी,
विश्व में किया देश का नाम।

फिर भी बेटी को क्यों मारे?
कोख में ही मिटाये नामों निशान।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
केवल नारा ना बनाओ।

अपने घर की लक्ष्मी, सरस्वती,
और दुर्गा के अस्तित्व को बचाओ।

बेटी दे कर अपनी सेवा,
बस मांगे थोड़ा सा प्यार।

उसके जीवन की रक्षा कर,
हम भी क्यों ना दें कर्ज उतार।

बेटियों के जीवन को संरक्षित कर,
शिक्षा दें कर,
जीवन उनका दो सुधार।

देखो तब कैसे? रोशन करती,
माता–पिता का जग में ये नाम।

बेटी है तो घर में उजियारा।
बेटी से महके–चहके हर आंगन,

रख लो भाइयों इसका कुछ ध्यान।
कन्या भ्रूण हत्या को रोको।

मत बनो तुम सब शैतान।
क्योंकि––––

बेटियों से है रोशन जहान,
बेटियों से ही उन्नत हिंदुस्तान।

कमल अहमद
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

आधुनिक जीवन शैली में योग का महत्व

आज के आधुनिक युग में हमारी व्यस्त दिनचर्या, गलत खान–पान व जीवन शैली इस प्रकार से प्रभावी हो चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के अनेकानेक रोगों से ग्रस्त होकर वैद्य, डॉक्टरों व हकीमों के पास जाकर अपनी मेहनत से कमाई दौलत का बड़ा हिस्सा इलाज पर खर्च करता है। यह सच्चाई है ।

मैं स्वयं सुखी रहूँ, परिवार सुखी रहे, पड़ोसी, देश व पूरा विश्व सुखी हो । ऐसा कैसे हो कैसे हम निरोगी रहें ?

इसका जवाब है योग।

यह ऐसा जीवन जीने के लिए संकल्प लेने तथा उसे कार्यान्वित करने का साहस केवल योग ही प्रदान कर सकता है योग मानव को शांति और सुख का रास्ता दिखाने का एक सर्वोत्तम साधन है। सभी को आज योग की परम आवश्यकता है क्योंकि हमको स्वास्थ्य चाहिए जिससे हम सांसारिक कार्य को सफलतापूर्वक कर सकें। हड्डियों की लचक, मांसपेशियों का संतुलन, रक्त का सुचारू रूप से संचार तथा युक्त ग्रंथि स्राव योग से ही तो संभव है । इतना ही नहीं हमारे शरीर की महत्वपूर्ण प्रणालियां, पाचन, श्वसन व स्नायु आदि सही ढंग से कर्म करती हैं । इसके अतिरिक्त शरीर के ऐसे अंग जिनके बिना जीवन संभव नहीं होगा जैसे हृदय मस्तिष्क, गुर्दे आदि को पुष्ट करने का कार्य भी योग में ही होता है ।

योग करने से शारीरिक अंगों की सुदृढ़ व्यवस्था उत्पन्न होती है जिसके कारण बीमारियां पास आती ही नहीं है यदि किसी कारण बीमारियां आती भी है तो वह शीघ्र ही समाप्त भी हो जाती हैं । स्वस्थ शरीर के साथ स्वस्थ मन और बुद्धि भी चाहिए जिससे मानसिक शांति, बुद्धि की तटस्थता, निर्णय लेने की शक्ति और चिंतन की एक स्पष्ट दिशा भी योग से ही मिल सकती है । यह भी पूर्ण नहीं है । चित्त शुद्धि भी तो चाहिए जो कि योग में जाने से ही प्राप्त होगी ।

महर्षि पतंजलि के अनुसार योग के आठ अंग कहे गए हैं 'यम' समाज के उद्धार के लिए है । 'नियम' अपने व्यवहार को अच्छा बनाने के लिए है । 'आसन' शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए ।'प्राणायाम' मानसिक विकार दूर करने के लिए । 'प्रत्याहार' इंद्रियों को अंतर्मुखी बनाने के लिए। 'धारणा' एकाग्रता बढ़ाने के लिए है। 'ध्यान' चित्त को शुद्ध करने के लिए है । 'समाधि' योग की अंतिम परिधि है ।

यदि आप भी चाहते हैं शरीर स्वस्थ रहे, जीवन सुखी रहे, प्रसन्न व संतोषमय रहे । पूर्णता का एहसास हमें हो । किसी भी प्रकार की कमी ना महसूस हो ।निष्काम कर्म करने के भाव हममें आए तो आप तुरंत योगाभ्यास शुरू करें अपने इस निर्णय को कल पर न छोड़ें ।

प्रिया शर्मा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजेड, नोएडा

दृष्टिकोण

एनजीओ के बच्चों के साथ प्रस्तुति की एक झलक

वर्ष 2014 की बात है जब मैंने कॉलेज के छात्रों द्वारा संचालित गैर सरकारी संगठन (NGO) 'कर्तव्य' के बारे में सुना जिसका उद्देश्य "गरीबी से त्रस्त" और "झुग्गी बस्तियों में रहने वाले" छात्रों को शिक्षित करना है। मुझे संगठन का हिस्सा बनने की उत्सुकता हुई इसलिए मैं इंटरव्यू देने गयी और मेरा चयन भी हो गया लेकिन उस इंटरव्यू ने मुझे एक सबक दिया जिसे मैं जिंदगी में कभी नहीं भूल सकती। कुछ प्रश्न पूछने के बाद साक्षात्कारकर्ताओं ने मुझसे एक काल्पनिक प्रश्न का उत्तर देने को कहा। उन्होंने मुझे बताया कि उनके सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब भी वे झुग्गी बस्तियों में जाते हैं और उन बच्चों के माता–पिता से उन्हें स्कूल भेजने के लिए कहते हैं तो वे मना कर देते हैं। फिर उन्होंने मुझे यह मानने के लिए कहा कि वे माता–पिता हैं और मुझे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए मनाने के लिए कहा । फिर इस तरह बातचीत शुरू हुई :–

मैं:– आप अपने बच्चों को हमारे पास पढ़ने के लिए भेजिए। हम आपके बच्चों को बेहतरीन शिक्षा देंगे और उन्हें सही ढंग से जीवन जीने का तरीका सिखाएंगें।

माता–पिता:– मेरा बेटा अपने पिता के साथ काम पर जाता है और उन दोनों की कमाई से ही हमारा घर चलता है। बेटी 18 की होगी तो इसकी शादी कर देंगें। हम अपने बच्चों को पढ़ने के लिए नहीं भेज सकते।

मैं:– आप संविधान के अनुच्छेद 21–ए के तहत अपने बच्चों को शिक्षा देने से मना नहीं कर सकते है। यह उनका अधिकार है और इतने छोटे बच्चे को काम पर भेजना जुर्म है। माता–पिता:– आपके लिए यह कहना आसान है पर हमारे लिए यह करना उतना ही मुश्किल है। हमारे पास इतना पैसा नही है कि इन्हें स्कूल भेज सकें। हम इस छोटी सी जगह में अपनी रोजी रोटी पाने की आशा के साथ जीवित रहते हैं। अगर हम अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे तो हमारी रोज की रोटी के लिए पैसे कौन कमाएंगा।

मैं उन्हें आगे जवाब देने में असमर्थ थी और साक्षात्कारकर्ताओं ने यह महसूस कर लिया था । फिर उन्होंने मुझसे कहा कि आपने बहुत अच्छा प्रयास किया लेकिन हमेशा ध्यान रखें कि आपको दूसरे व्यक्तियों के दृष्टिकोण को देखकर जवाब देना है। आप उन लोगों से बात कर रहे थे जिन्हें कभी शिक्षा नहीं मिली और वे शिक्षा के अधिकार और संविधान से पूरी तरह अनजान हैं। इसलिए वे आपकी बात नहीं समझेंगे । आपको उन्हें यह आशा देनी होगी कि शिक्षा उनके जीने के तरीके और आने वाली पीढ़ी के जीवन को बदल सकती है ।

तब मैं पूरी तरह से समझ गयी थी कि अन्य लोगों के दृष्टिकोण को जानना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें बेहतर ढंग से बातचीत करने और उन्हें बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

प्रिया शर्मा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजेड, नोएडा

सावन जा रहा है

माता रानी सावन बीता जा रहा है,
लेकिन छोड़कर हमें तुम नहीं जाना।
तेरी कृपा से सावन लौटकर आएगा,
यह तो सावन का किस्सा है पुराना।
माता रानी---------

मैया तुम जहां हो, वहां खुशहाली है,
बिन सावन के भी सुंदर हरियाली है।
सावन आता सपने दिखाने के लिए,
माता तुम जानती हो इसका बहाना।
माता रानी---------

तुमको माता सारी दुनिया मानती है,
तेरी शक्ति को बरखा भी जानती है।
तेरा निवास लोगों के मन मंदिर में है,
सावन का कहीं कोई नहीं है ठिकाना।
माता रानी------

देवी तेरी महिमा है बड़ी निराली,
तेरे दरबार से कोई लौटता नहीं खाली।
सावन जाता है तो उसे जाने दो मैया,
अपने भक्तों को मां तुम नहीं भूलाना।
माता रानी-------

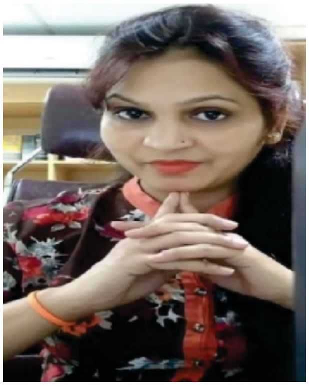

श्रीमति सोनिया वीर
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजेड, नोएडा

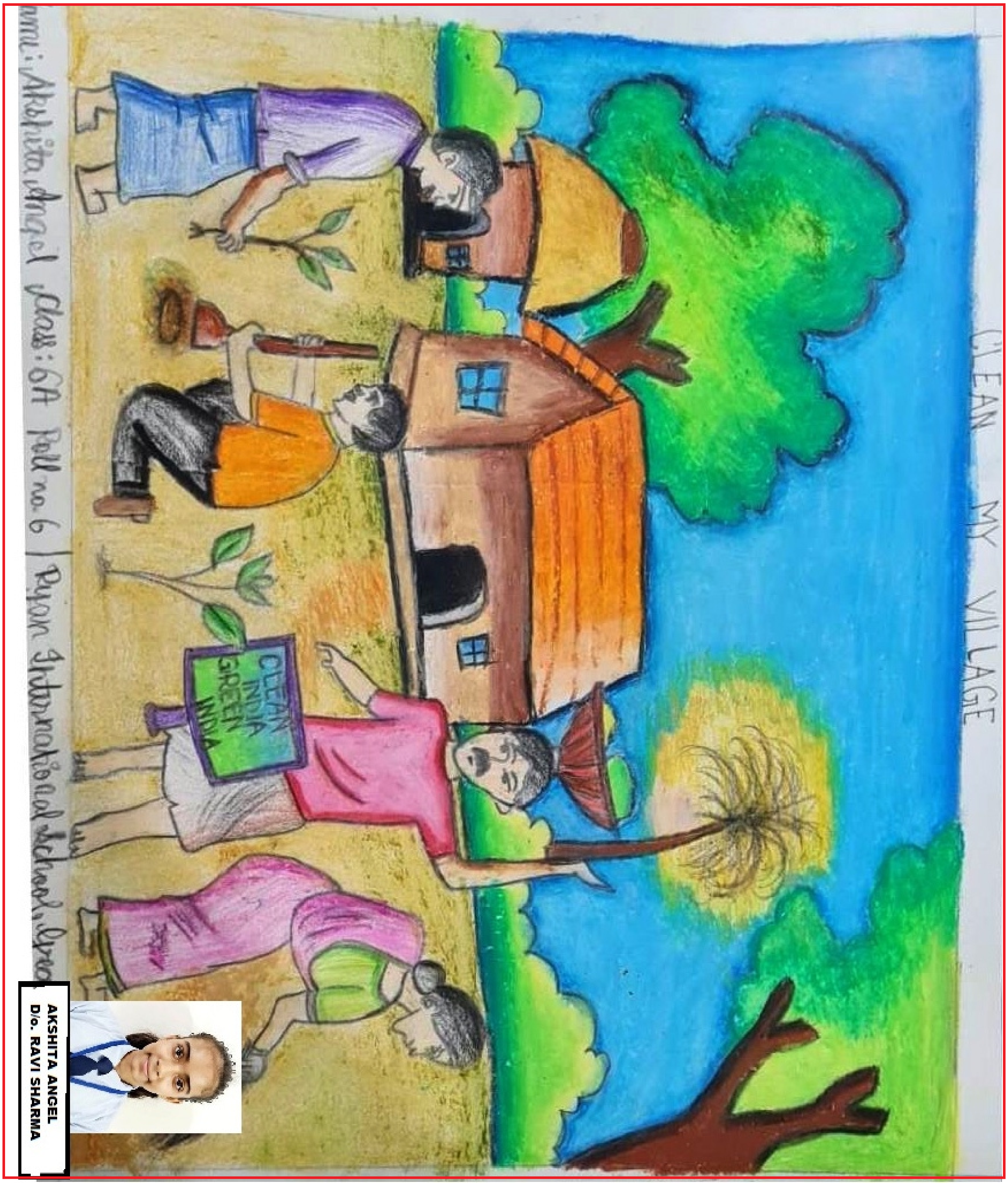

अक्षिता एन्गल, पुत्री रवि शर्मा

छोटे बच्चे की इच्छा

जब हम छोटे बच्चे थे
सच्चाई से अनजान थे
तब हम कितने अच्छे थे
जब हम छोटे बच्चे थे

मन कोमल था सूरत भोली थी
और टूटी –फूटी बोली थी
जब डग – मग डग – मग चलते थे
तब माँ बाप के दिल हिलते थे
रूठ जाएँ अगर तो
खिलौनों और मिठाइयों के ढेर लगते थे
जब हुक्म हमारा चलता था
तब हम कितने अच्छे थे
जब हम छोटे बच्चे थे

दादा – दादी , नाना–नानी,
मामा–मामी , चाचा–चाची
सबकी आँखों के तारे, माँ–बाप के दुलारे
जब प्यार हमें सब करते थे
तब हम कितने अच्छे थे
जब हम छोटे बच्चे थे

समय बदला सूरत बदली
कोमल मन की सीरत बदली
विकारों का प्रहार हुआ,
चालाकी चतुराई हममें भी आई
अब हकीकत हमारे सामने है भाई
घर की भी और समाज की भी
कैसी रस्सा–कस्सी है, भाग दौड़ है जल्दी है
नहीं समय हमारे लिए अब,
यह बात हमें अब खलती है
जब हम दिल के सच्चे थे
तब हम कितने अच्छे थे
जब हम छोटे बच्चे थे

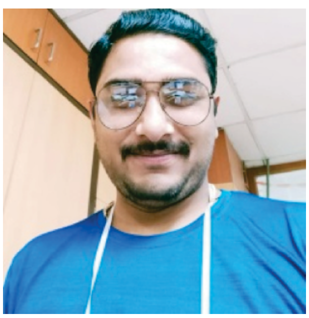

प्रवीन कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

बेटियाँ

ओस की एक बूंद सी होती है बेटियाँ,
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती है बेटियाँ ।

रोशन करें बेटा एक कुल को तो,
दो–दो कुलों की लाज होती है बेटियाँ ।

कोई नहीं होता एक दूसरे से कम,
हीरा है अगर बेटा तो मोती है बेटियाँ ।

काँटों की राह पर खुद चलती रहेंगी,
पर ओरों की राह में फूल बोती है बेटियाँ ।

विधि का विधान है यही दुनिया की रस्म,
मुट्ठी में भरें नीर सी होती है बेटियाँ ।

संसार ने यह कैसी रीत है बनाई,
अपनी होते हुए भी पराई होती है बेटियाँ ।

शीतल
पत्नी श्री सोनू कुमार
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

इतिहास

एक तिमाही काफी होती है इतिहास बदलने को
एक तिमाही काफी होती सही दिशा में चलने को
एक तिमाही काफी होती मस्तक ऊँचा करने को
एक तिमाही काफी होती सपने पूरे करने को।

एक तिमाही में ही अब तुम खुद का ये संसार बदल दो
खुद को अपना मित्र मानकर सोच और व्यवहार बदल दो
लक्ष्यप्राप्ति में जो बाधक हो, उस रिश्ते को आज तोड़ दो
जिसको अब तक छोड़ न पाए, उस दुर्गुण को आज छोड़ दो।

करो भरोसा निज ताकत पर, तुम इतिहास बदल सकते हो
अपने सपनों की दुनिया का तुम विन्यास बदल सकते हो
निज सपनों का गला घोंटकर, क्यों तू खुद को मार रहा है
अभिमन्यु, अब तो उठ बैठो, चक्रव्यूह ललकार रहा है।

आलस की भट्टी में अपने हाथ सेंकना बन्द करो अब
लक्ष्य साधने में जुट जाओ या स्वप्न देखना बन्द करो अब
विजय की चाहत भी है मन में, लड़ने में भी डर लगता है
यदि ऐसा है तो सुन ले तू रोते – रोते मर सकता है।

स्वप्न उन्हीं के पूरे होते, जो अंगारों में पलते हैं
श्रम के हवनकुंड में जिनके दोनों हाथ सदा जलते हैं
हार भले निश्चित हो लेकिन अभिमन्यु – सा लड़ना सीखो
कोई किसी का नहीं यहाँ पर, अपने दम पर बढ़ना सीखो।

तू कहता है नहीं भरोसा, दुनिया को तेरी प्रतिभा पर
और सभी हैं प्रश्न उठाते, तेरी मेहनत पर, क्षमता पर
तो इसमें अनुचित भी क्या है? सृष्टि का तो नियम यही है
निंदा से डरकर रुक जाना, कर्मवीर का कर्म नहीं है।

उगते सूरज को देव मानकर हम सब शीश झुका लेते हैं
और लोटे में जल को भरकर, हम सब अर्ध्य चढ़ा देते हैं
लेकिन उसका गुणगान सुना क्या? जो खुद से ही ऊब रहा हो
कभी शाम को पूजन देखा जब सूरज खुद डूब रहा हो।

नहीं किसी के रहो भरोसे, तुम खुद को मजबूत बनाओ
भाग्य के नाम लिखो इक चिट्ठीयों मेहनत को दूत बनाओ
चिट्ठी में लिख दो कि तुमने भाग्य से डरना छोड़ दिया है
लिख दो, जीना सीख लिया है, घुट – घुट मरना छोड़ दिया है।

लिख दो कि अब भाग्य के आगे शीश नहीं झुकने वाला
लिख दो कि जो भी हो जाये, संग्राम नहीं रुकने वाला
लिख दो कि कायर के जैसे रण को छोड़ नहीं भागोगे
स्वाभिमान को गिरवी रखकर नहीं किसी से कुछ माँगोगे
लिख दो कि निज अंतर्मन को करके शुद्ध हमीं जीतेंगे
जो जिसको करना है कर ले, अंतिम युद्ध हमीं जीतेंगे।

अद्भुत सदा रहा है भारत का इतिहास
वीरों द्वारा शत्रु का संहार किया जाता है
पन्ना सी क्षत्राणी यहाँ जन्म लेती रहीं सदा
देशहित निज सुत वार दिया जाता है।

शीश झुकते नहीं हैं वीरों के आगे कभी
घास खाके जीवन गुजार दिया जाता है
क्षमा शिशुपाल को यहाँ है सौवीं गाली तक
फिर शीश धड़ से उतार लिया जाता है।

संदीप कुमार शुक्ल
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

माँ जैसा कोई नहीं

माँ आपके ना होने से लगता सब बेकार हैं,
जिन्दगी मुझे लगती भार है।

आप पास नही हो लगता सब हैं झूठा सा,
अपने ही आप में लगता है सब रूठा सा।

कोई खुशी ही ऐसी होगी जब आप याद ना आओ,
पल पल लगता है बस एक बार आ जाओ।

आप बिन बड़ी मुश्किल से मै जी पाऊ,
बस हर पल चाहू की आपको अपने पास पाऊ।

परेशान मै होती तो दर्द में आप होती थी,
मेरी हर परेशानी मे आप मेरे साथ होती थी।

बच्चे भी मेरे आपको बहुत चाहते थे,
जब भी मै उनको डाँटती आप उन्हे सराहते थे।

अभी भी हर पल आँखें नम रहती हैं,
आपके बिना बहुत है मुश्किल जीना, ये भी यही कहती रहती हैं।

अब कितनी बातें दिल में दबानी पड़ती हैं,
मुँह बंद और आँखे मंद रखनी पड़ती हैं।

अगर आपको इतनी जल्दी जाना ही था तो इतना समझा भी जाती,
आपके बिन जिया कैसे जाता हैं ये भी सिखा ही जाती।

इतना समय हो गया अब तक संभल ना पायी,
हर पल हर दिन आपकी बहुत याद आयी हैं।

बस इतना जानती हूँ, तुम जैसा कोई नही,
सब सच कहते थे और कहते है, माँ माँ होती है माँ जैसी कोई नहीं।

श्रीमति करूणा गाबा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

घर का "बड़ा बेटा"

बड़ा बेटा होना भी
कितना बड़ा होता है,
हर चुनौती में सबसे
आगे खड़ा होता है ।

मिल जाती है चीजें
कितनी आसानी से छोटों को,
जिन्हें कमाने के लिए
वो दिन रात लड़ा होता है ... बड़ा बेटा होना भी ....

ना रो सकता है
ना कुछ कहने का विकल्प होता है,
कोई जागता है तभी
परिवार पूरा सोता है ... बड़ा बेटा होना भी ....

माँ – बाप का सहारा
भाई – बहनों की आस होता है,
घर के एक मजबूत स्तम्भ की
तरह होता है ..... बड़ा बेटा होना भी

मोहित चौधरी
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

जश्न - ए - आजादी

आओ जश्न– ए – आजादी,
मिल के हम मनायें ।

जम्मू से कन्याकुमारी,
अब एक ही कहलायें ।

ये देश चमके ऐसे,
चमके सूरज जैसे ।

सुंदर अपना देश,
एकता का संदेश,
विश्व में फैलायें ।

आजादी के परिंदे,
उड़ते पंख फैलायें ।
अमनोचमन की धारा,
में बहे देश हमारा ।

एक तिरंगे की छाँव,
में बैठे जन–जन हमारा ।
आओ जश्न–ए – आजादी,
मिल के हम मनायें ।

मोहित चौधरी
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

साधू-संत

जनता की आँखों पर पट्टी बंधी हुई है
मार्किट में दुकानो से ज्यादा संतो की फौज खडी हुई है ।।

अपने पिता का कभी आदर नही किया
इनको बापू कहते है,
ये जनता को मुर्ख और देश को लूट रहे है
साबुन, सर्फ, धूपबत्ती, अगरबत्ती, चाय और
ना जाने क्या–२ बेच रहे हैं ।।

हमे लूट–२ कर इन्होने करोडो की संपत्ति कर ली
हम मुर्ख थे की रोज सुबह उठे और इनकी पूजा कर ली ।।

पूजा ही करनी है तो अपने माँ–बाप की करो
जन्नत वहां मिलती है, यहाँ तो बस इज्जत छिनती है ।।

आज के युग में ये अच्छा धंधा है
गंदा है तो क्या हुआ मनुष्य तो अंधा है ।।

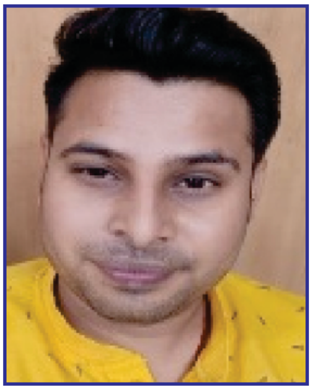

आकाश शर्मा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

शुक्रिया

चोटों पे चोट देते ही जाने का शुक्रिया
पत्थर को बूट की शक्ल में लाने का शुक्रिया ।
जागा रहा तो मैंने नए काम कर लिए
ऐ नींद आज तेरे ना आने का शुक्रिया ।।

सूखा पुराना जख्म नए को जगह मिली
स्वागत नए का और पुराने का शुक्रिया ।
आती न तुम तो क्यों में बनता ये सीढ़ीयां
दीवारों, मेरी राह में आने का शुक्रिया ।।

आंसू–सा माँ की गोद में आकर सिमट गया
नजरो से अपनी मुझको गिराने का शुक्रिया ।
अब यह हुआ कि दुनिया ही लगती है मुझको घर
यूँ मेरे घर में आग लगाने का शुक्रिया ।।

गम मिलते है तो और निखरती है शायरी
यह बात है सारे जमाने का शुक्रिया ।।

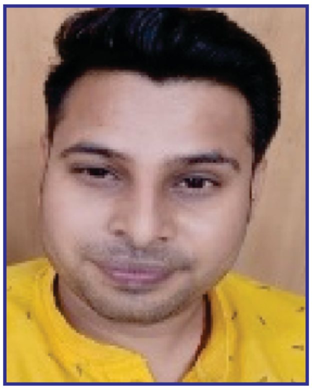

आकाश शर्मा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

तू कुछ करने की जिद कर

तू कुछ करने की जिद कर,
तू जिंदा है जिंदा रहने की जिद कर।
खामोश नजरों से कहने की जिद कर,
तू वक्त के तकाजे से लड़ने की जिद कर।
तू कुछ करने की......................
हाथ की लकीरों को गढ़ने की जिद कर,
आंधियाँ बहुत हैं, बहुत से हैं तूफाँ,
इसमें तू खुद को डटने की जिद कर।
पहरे बहुत हैं सर पे ये तेरे,
तू सर उठाने की जिद कर।
तू कुछ करने की......................
पैरों में हैं बंधन, हाथों में हैं कंगन,
तक्कलुफ तो बहुत होगा तुझको,
तू खुद को आजमाने की जिद कर।
कश्तियाँ बहुत डूबीं मझधार में,
तू खुद को पार लगाने की जिद कर।
तू कुछ करने की......................
खुदा की खुदाई देखी बहुत पर,
खुदी को आजमाने की जिद कर।
जहाँ तो ये सारा तेरे लिए है,
तू खुद को आजमाने की जिद कर ।
तू कुछ............................
ये दुनिया ये मौसम ये बदलते नजारे,
आंखों में है सपने हाथो में लकीरें,
सपनों के खातिर,
तू खुद को मिटाने की जिद कर।
तू कुछ..............................

जितेन्द्र कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

हर पल जियो

हर पल जलो उस आग में,
जो तुम नहीं चाहते,
बिना जले कुन्दन नही बना करते।
तपस्या ही तो है मंजिल तुम्हारी,
बिना साधना के कोई महान नही बना करते।
ये जीवन ही तो कर्मो का झरोखा है,
बिना जलाए दीप नही जला करते।
बांधाए बहुत आएगी राह में तुम्हारे,
बिना मील के पत्थर के,
सफर नही हुआ करते।
चाहतें तो बहुत होती हैं, मन में,
चाहतों के गुलदस्ते में,
बिना महनत के फूल नही खिला करते।
अगर लक्ष्य महान है तो,
बिना कठिन परिश्रम के,
लक्ष्य नही मिला करते।
स्वर्ग की चाहत होती है सभी को,
बिना मरे स्वर्ग नही मिला करते।
लड़ना भी होगा,
कभी खुद से कभी खुदा से।
बिना लड़े कोई सिकंदर नही बना करते।
मैं तो गरिमा हूँ अपनी जीत की,
बिना जितेंद्र के गरिमा नही मिला करती।

जितेन्द्र कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

तुझ में नजर आऊँगी

अगर ढूढ़ना है मुझे तो खुद में ढूढ़ लेना,
सदा तुझ में नजर आऊँगी।
अपने चहरे को गौर से देखना,
मैं खुद में नजर आऊँगी।
तेरी उम्मीद हूँ मैं,
तेरे हर हौसले में नजर आऊँगी।
अगर ढूड़ना है.................

तेरी चाहत पर तो किसी और का हक था,
अपने दिल को टटोल कर देखना,
तेरे दिल में नजर आऊँगी।
रूठती हूँ मैं इस लिए,
तू मनाए मुझको,
तेरे हर एक नक्श में नजर आऊँगी।
अगर ढूढ़ना है.................

तेरा मेरा मिलना एक इत्तिफाक था,
तेरे हर इत्तिफाक में नजर आऊँगी।
तेरे मेरे हाथ की लकीरों में बहुत अंतर है,
अपने हाथ की लकीरों को देखना,
तेरी हर लकीर में नजर आऊँगी।
अगर ढूढ़ना है.................

गरिमा
पत्नी जितेन्द्र कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

परदेश की दौड़

मैं अपनों की खातिर ही तो
मुल्क पार आया हूँ...
ए–जिन्दगी में तेरी दौड़ में
आज हार आया हूँ...

कांच के महलों का ख्वाब देखती है
आज नन्ही आँखें इस पत्थरों के शहर में...
मैं उम्मीद की किरण जो अपने
बच्चों के दिलों में डाल आया हूँ...

लौट आऊंगा तो न जाने क्या–क्या
खो चुका होगा ए–वक्त मेरा...
मैं अपने माँ बाप को जो
छोड़ कर बीमार आया हूँ...

आज हाथों में है कई कागज के टुकड़े
पर मैं परेशान बहुत हूँ
ए–जिन्दगी में जीत कर भी
तेरी इस दौड़ में आज हार आया हूँ...

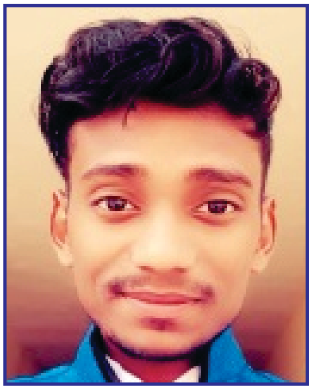

राजेश चौहान
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

"शायरी"

"मंज़िल मिले न मिले, राहों में है हम कुछ तो बात होगी। हम इस दुनिया में रहे न रहे, फिर भी हमारी बात होगी।"

"अगर दर्द आप बयां करें उसका कोई भाव नहीं होता, पन्नों पर उतारते ही इनको भी ख़रीदार मिल जाते है।"

"किसी और की नज़रों में अच्छा होने के लिए सच्चा होना जरुरी नहीं है, सच्चा होना खुद के लिए बहुत ज़रुरी है।"

"ज़िंदगी बेहतर बनाने में ज़िंदगी को ही वक्त नहीं दे रहे है। कल की परेशानी के चलते आज को जी नहीं पा रहे है ।"

"अब किसी और से बात करने में दिल नहीं लगता, जब से मैंने अपने आप से बात करना शुरू किया है।"

"इस दुनिया में अगर किसी से उम्मीद रखना है तो सिर्फ अपने आप से रखो।"

"ये ज़िंदगी की कहानी भी अजीब है, यहाँ खुद के अलावा सभी रिश्ते सुलझे हैं।"

"दर्द मिलने के बाद एहसास हुआ, की खुशियों की कीमत कितनी है।"

"घोंसला बनाने में हम इतने मशगूल हो गए , की उड़ने को पंख भी थे, ये भी भूल गए.
जिन्दगी को जिओ न की गुजारो ।"

"हर जुर्म पे उठती हैं उंगलियां मेरी तरफ,
क्या मेरे सिवा शहर में मासूम हैं सारे..!!"

"मेरी आंखों को देख कर एक शख्स बोला कि,
तेरी खामोशी बताती है तुझे कभी हँसने का शौक था"..!!

"मैं किसी की नज़र में अच्छी हूँ,
किसी की नज़र में बुरी हूँ,
पर हक़ीकत तो ये है कि
जो जैसा है उसकी नज़र में वैसी हूँ।"

"ज़िन्दगी तेरी भी, अजब परिभाषा है,
सँवर गई तो जन्नत, नहीं तो सिर्फ तमाशा है।"

"खो गई हूँ इस भीड़ मे,
खुद को भूलती जा रही हूँ,
पहले हर बात पर बहस करती थी,
अब खामोश होती जा रही हूँ।"

श्रीमति रचना सिन्हा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजेड, नोएडा

विदेश व्यापार नीति स्वच्छता काम की नैतिकता के विषय पर टिप्पणी

भारत की अच्छी अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को पाने की दिशा में विकास और रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए माल और सेवाओं के निर्यात के माध्यम से अर्थव्यवस्था को सही दिशा देगी। भारत में निर्धारित समयावधि में तीव्र गति से काफी मात्रा में अमरीकी डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को हासिल करने के लिए माल और सेवाएँ दोनों स्तरों पर निर्यात को बढ़ावा देना सबसे जरूरी है। लेनदेन की लागत को कम करने और ईज ऑफ डुइंग बिजनेस को बढ़ावा देने के लिए नीति, नियामक और परिचालन ढांचे से संबंधित घरेलू और विदेशी बाधाओं को भी व्यवस्थित तरीके से दूर करने की जरूरत है, ताकि कुशल, कम लागत और पर्याप्त माल एवं उपयोगिता के बुनियादी ढांचे के जरिए कम लागत वाले परिचालन संबंधी माहौल को बढ़ावा दिया जा सके। सरकार द्वारा कुशल बुनियादी ढांचे को समर्थन देने के साथ घरेलू निर्माण और सेवा क्षेत्र के परिचालन में सुधार से भारत के भीतर असंतुलन दूर होगा और व्यापार नीति को बढ़ावा मिलेगा।

२. विदेश में अपने कारोबार का विस्तार एवं विकास करने वाले उद्यमी को उस देश की मूलभूत कानूनी संरचना को भी अवश्यवता ध्यान में रखना चाहिए। उसके लिए यह जरूरी है कि ऐसे कानूनों और विनियमों का पालन करें ताकि उसके संगठन का कार्यकुशल एवं लाभकारी कार्यकरण सुनिश्चित हो सके और वह विदेश में आने वाली चुनौतियों को सामना कर सके।

3. भारत से वस्तु निर्यात योजना के तहत प्रोत्साहन/पुरस्कार देने के लिए देशों को तीन समूहों में श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए। विशेष आर्थिक क्षेत्र से निर्यात बढ़ाने के लिए सरकार ने एसईजेड में स्थित इकाईयों को प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाओं से पुरस्कृत करना चाहिए। ईपीसीजी योजना के तहत स्वदेशी निर्माताओं से ही पूंजीगत सामान खरीदने के उपाय किए जाने चाहिए। इससे घरेलू पूंजीगत सामान निर्माण उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। इस तरह

के लचीलेपन से निर्यातकों को स्थानीय एवं वैश्विक दोनों ही तरह की खपत के लिए अपनी उत्पादक क्षमताओं को विकसित करने में मदद मिलेगी।

4. रक्षा एवं हाई–टेक उत्पादों के निर्यात को नई गति प्रदान करने के भी उपाय भी करने चाहिए। साथ ही हथकरघा उत्पादों एवं किताबों, चमड़े के जूते–चप्पल और खिलौनों के ई–कॉमर्स निर्यात को भी भारत से वस्तु निर्यात योजना को भी लागू करना चाहिए।

5. शत–प्रतिशत ईओयू/ईएचटीपी/एसटीपीआइ/बीटीपी योजनाओं के तहत निर्माण एवं निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भी कदम उठाने चाहिए। इसके अलावा ये इकाईयां अपनी बुनियादी ढांचागत सुविधाओं को भी साझा कर सकेंगी। विदेश व्यापार नीति में 'दर्जा प्राप्त' नामक शक्तिशाली उद्योगपतियों को परिभाषित एवं वर्गीकृत किया जाना चाहिए। इसके अनुसार अब शक्तिशाली उद्योगपतियों, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और देश के विदेशी व्यापार को बढ़ाने में सफलतापूर्वक योगदान दिया है, उसको मान्यता प्रदान करना चाहिए ।

6. निर्माण क्षेत्र एवं रोजगार सृजन में छोटे एवं मझौले उपक्रमों की विशेष अहमियत को ध्यान में रखते हुए निर्यात को नई गति की और ले जाना चाहिए

7. इन योजनाओं के तहत जारी की जाने वाली ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप और इन स्क्रिप के एवज में आयात की जाने वाली वस्तुएं पूरी तरह से हस्तांतरण योग्य हैं।

8. विदेश व्यापार को विनियमित करने एवं बढ़ावा देने के काम में मूल रूप से लगा हुआ है। उदारीकरण एवं भूमंडलीकरण तथा निर्यात बढ़ाने के समग्र उद्देश्य को ध्यान में रखकर तब से विदेश व्यावपार महानिदेशालय को सूत्रधार की भूमिका सौंपी जानी चाहिए। देश के हितों को ध्याान में रखकर आयात /निर्यात के नियंत्रण/निषेध के स्थान पर निर्यात/आयात के संवर्धन एवं सुगमता पर बल दिया जाना चाहिए। ताकि विदेशी बाधाओं को भी व्यवस्थित तरीके से दूर किया जा सके ।

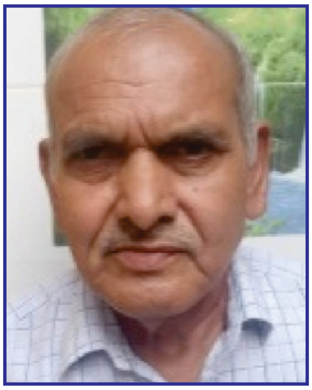

कृष्ण कुमार - II
डाटा एंट्री आप्रेटर
एनएसईजेड, नोएडा

प्यारी माँ

हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ
कभी डाँटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ
हमारी आँखो के आंसू, अपनी आँखो मे समा लेती है माँ
अपने होठो की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ
हमारी खुशियो में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ
जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ

दुनिया की तपिश में, हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ
प्यार भरे हाथो से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ
बात जब भी हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ
रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ

लब्जो मे जिसे बयाँ नही किया जा सके ऐसी होती है माँ
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते है।

राहुल कुमार
चपरासी
एनएसईजैड, नोएडा

तेरी जय जयकार

उनके जश्न में भी तेरा जलवा बरकरार है।
सच को तुमपे नाज है, फख्र तुमपे यार है।
चुनौती स्वीकार कर लड़ना अड़ना जरुरी है।
तुम बहादुरी से लड़े, तेरी जय जयकार है।

क्या हुआ गर खेल में पराजय लगी हाथ।
परछाई है संग छोड़ गये सारे अपने साथ।
इमानदारों के लिए हमेशा दुश्वारियाँ हजार है।
.......तुम बहादुरी

मैनें देखा है राहों में तेरा सूर्य सा अभिनंदन।
जनसैलाब की आँखों में हर्षातिरेक वाला क्रन्दन।
दिल जीतना देश जीतने से बेहतर व्यापार है।
.......तुम बहादुरी

अना को नहीं गिरवी रखा अनीति के लिए।
पथभ्रष्ट हुए नहीं कभी स्वार्थ कुरीति के लिए।
कर्तव्यच्युत नहीं कर सके,रकीबों धिक्कार है।
.......तुम बहादुरी

जीतने वाले अपनी इस जीत पे पछतायेंगे।
आइने से खुद नजर मिलाके हार जायेंगे।
शर्म से गर्दन झुकी है शीशा भी शर्मसार है।
.......तुम बहादुरी

प्रशांत कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
एनएसईजैड, नोएडा

फूल

फूल के देश के वीरों के लिए विचार

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी–माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक

रोहित कुमार
चपरासी
एनएसईजैड, नोएडा

मेरा गांव

यहाँ गावं के दिल में,
जहाँ घास हैं हरी,
जिंदगी हैं वैसी मधुर,
जैसे रहती हैं हमेशा।

भगवान में विश्वास अभी जीवित हैं
और सुबह की घंटी के साथ,
तैरता है प्रभु का विचार,
उगते हुये अन्न के साथ।

भगवान आते हैं बूँदों के साथ,
और फसलें उगती हैं विशाल,
यहीं हैं गावं का विश्वास,
जो हैं सबसे अच्छा,
और सबसे सुन्दर।

रोहित कुमार
चपरासी
एनएसईजैड, नोएडा

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग
विकास आयुक्त का कार्यालय
नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र
नोएडा दादरी रोड, फेस - II, नोएडा
जिला - गौतमबुद्ध नगर - 201305

आपको हमारा प्रेरणा का द्वितीय संस्करण अंक कैसा लगा जरूर बताऐं। हम आपके सुझाव और सहयोग का स्वागत करेंगें साथ ही भविष्य में आप अपनी **कहानियाँ, कविताएं चित्र, एसईजेड मे उल्लखनीय घटनाएं, एसईजेड का प्रदर्शन, एसईजेड, ईओयू विदेश व्यापार निति, स्वछता, काम की नैतिकता, योग और फिटनेस, सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता, देश विधेयक "DESH विधेयक" अन्य के बारे में अपने लेख भेजते रहें, ऐसी हम आपसे उम्मीद करते हैं।**

सम्पादनः-

श्री बिपिन मेनन
विकास आयुक्त

श्री किरन मोहन मोहाडिकर
उप विकास आयुक्त

श्री हरी किशन मीना
सहायक विकास आयुक्त

श्री जाविर अली
आशुलिपिक

सहयोगः-श्री मुनत्याज खान
सहायक

अधिकारियों की सूची

क्र.सं	अधिकारियों का नाम	पदनाम	टेलीफोन संख्या	ई–मेल
1	श्री ए. बिपिन मेनन	विकास आयुक्त	0120–2562315	dc@nsez.gov.in
2	श्री अमित कुमार गुप्ता	उपायुक्त (सीमा शुल्क)	0120–2462667	akgupta@nsez.gov.in
3	श्री बुद्धि प्रकाश	उपायुक्त (सीमा शुल्क) जयपुर	0141–2771744	buddhi.prakash@gov.in
4	श्री नितिन गुप्ता	उप विकास आयुक्त	0120–2567271	ddc1@nsez.gov.in
5	श्री राजेश कुमार	उप विकास आयुक्त	0120–2567275	ddc2@nsez.gov.in
6	श्री किरन मोहन मोहाडिकर	उप विकास आयुक्त	0120–2567273	ddc3@nsez.gov.in
7	श्री अजय कुमार मिश्र	वरि.लेखाधिकारी	0120–2567270	sr.ao@nsez.gov.in
8	श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय	सहायक विकास आयुक्त	वही	adc3@nsez.gov.in
9	श्री हरि किशन मीना	सहायक विकास आयुक्त	वही	adc5@nsez.gov.in
10	श्री आर के शार्मा	सहायक विकास आयुक्त	वही	adc1@nsez.gov.in
11	श्री प्रमोद कुमार	सहायक विकास आयुक्त	वही	adc4@nsez.gov.in
12	श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप	सहायक विकास आयुक्त	वही	kashyap@nsez.gov.in
13	श्री विकास	सहायक विकास आयुक्त मुरादाबाद	0591–235000	adc@moradabadsez.gov.in
14	श्री पंकज शर्मा	सहायक विकास आयुक्त जयपुर	0141–2770250	adcjaipur@nsez.gov.in

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नौएडा
गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग)
सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
ए–13, सेक्टर – 1, नौएडा – 201301

सम्मान–पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नौएडा वर्ष 2018–19 के दौरान राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का मूल्यांकन करते हुए उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए समिति के सदस्य कार्यालय, नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र, नौएडा–दादरी रोड, फेस–।।, नौएडा को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित करती है।

(अरविन्द कुमार)
सदस्य सचिव

(डॉ. अमिता प्रसाद)
अध्यक्ष

तिथि : 29.01.2020

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग
विकास आयुक्त का कार्यालय
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र
नौएडा दादरी रोड, फेस–II, नौएडा– 201305
फोन संख्या– 0120–2567268/69/70 एंव 0120–3021444/45/46
फैक्स संख्या– 0120–2562314
नगर कार्यालयः– 8 जी, 8वां तल, हंसालय बिल्डिंग, 15 बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली–110001
Email: dc@nsez.gov.in **Website:** www.nsez.gov.in

अधिकारियों की सूची

क्र.सं	अधिकारी का नाम	पद नाम	टेलीफोन संख्या	ई–मेल
1.	श्री अ. बिपिन मेनन	विकास आयुक्त	0120-2562315	dc@nsez.gov.in
2.	श्री सुरेन्द्र मलिक	संयुक्त विकास आयुक्त	0120-2567274	jdc@nsez.gov.in
3.	श्री अमित कुमार गुप्ता	उपायुक्त (सीमा शुल्क)	0120-2462667	akgupta@nsez.gov.in
4.	श्री नितिन गुप्ता	उप विकास आयुक्त	0120-2567271	ddc1@nsez.gov.in
5.	श्री राजेश कुमार	उप विकास आयुक्त	0120-2567275	ddc2@nsez.gov.in
6.	श्री किरन मोहन मोहाडिकर	उप विकास आयुक्त	0120-2567273	ddc3@nsez.gov.in
7.	श्री अजय कुमार मिश्र	वरिष्ठ लेखाअधिकारी	0120-2567270	sr.ao@nsez.gov.in
8.	श्री आर. के. शर्मा	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270	adc2@nsez.gov.in
9.	श्री हरि किशन मीणा	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270	adc5@nsez.gov.in
10.	श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270	adc1@nsez.gov.in
11.	श्री प्रमोद कुमार	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270	adc4@nsez.gov.in
12.	श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270	kashyap@nsez.gov.in
13.	श्री मनीश अग्रवाल	अधीक्षक (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270	manish.agarwal@nsez.gov.in
14.	श्री संजय शुक्ला	मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270	sanjay.shukla71@gov.in
15.	श्री मुशीर अहमद खान	मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270	musheer.ahmad@nsez.gov.in
16.	श्री सुधीर कुमार	मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270	cancer_kittu007@yahoo.co.in

क्र.सं	अधिकारी का नाम	पद नाम	टेलीफोन संख्या	ई–मेल
17.	श्री लाल बाबू प्रसाद	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	lalbabuprasa.g139401@gov.in
18.	श्री मदन पाल सिंह	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	mpsmadan@gmail.com
19.	श्री विशाल गुप्ता	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	vishalgupta2903@rediffmail.com
20.	श्री राजीव सक्सैना	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	saxenarajiv007@gmail.com
सीतापुरा (जयपुर), विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री बुद्धि प्रकाश	उपायुक्त (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर)	0141-2771744	buddhi.prakash@gov.in
2.	श्री पंकज शर्मा	सहायक विकास आयुक्त, सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	adcjaipur@nsez.gov.in
3.	श्री मनीष गोयल	अधीक्षक (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	manishgoyal40@gmail.com
4.	श्री अशोक कुमार बंसल	मूल्य निरूपक, सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	ashokkb.g209301@gov.in
5.	श्री संजय चुघ	अधीक्षक (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	schughsuman@gmail.com
6.	श्री अनिल गुप्ता	अधीक्षक (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	anilg446@gmail.com
7.	श्री दिलीप पुनिया	अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	pooniazee@gmail.com
मुरादाबाद, विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री विकास	सहायक विकास आयुक्त, मुरादाबाद	0591-2350001	adc@moradabadsez.gov.in
गुरूग्राम, विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री अशोक कुमार	उपायुक्त (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	ashok.vishnoi@gov.in
2.	श्री नरेन्द्र सिंह रांगी	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	narendersr.g169401@gov.in
3.	श्री गजेन्द्र	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	gajendrak.d229401@gov.in
4.	श्री दुली चन्द	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	dulic.g089501@gov.in
5.	श्री सुविदंर कुमार	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	suvinderkumar99@gmail.com
6.	श्री तरूण कुमार शर्मा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	tarun4962@gmail.com
7.	श्री राकेश मनोचा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	rakeshm.g160901@gov.in
मोहाली (पंजाब), विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1	श्री करन गोयल	सहायक विकास आयुक्त, मोहाली (पंजाब)	-	karangoyal091@gmail.com
2	श्रीमती वैशाली चण्डोक	अधीक्षक (सीमा शुल्क) चण्डीगढ	-	vaishalichandhok@gmail.com
3	श्रीमती शिरले सूद	अधीक्षक (सीमा शुल्क) चण्डीगढ	-	shirley.sandy@yahoo.com
4	श्री मलकीत सिंह	अधीक्षक (सीमा शुल्क) चण्डीगढ	-	lims12345@gmail.com

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

नौएडा दादरी रोड,
फेस-II, नौएडा,
जिला-गौतमबुद्धनगर - 201305